

RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 फरवरी 2025

अंक 461 • फरवरी 2025

चंकमंक

बाल विज्ञान पत्रिका

मूल्य ₹50

1

कड़कड़ाती ठण्ड में पेट की गुड़गुड़



बृजेश

चित्र: पंकज साकिया

हमारी बस्ती में ठण्ड का नज़ारा ज़रा हटके होता है। बच्चे हों या बड़े, सभी के लिए रात में ठण्ड भगाने का एकमात्र ज़रिया अलाव ही होते हैं। ठण्ड में आग के सामने से हटने का मन ही नहीं होता है। जो एक बार आग के सामने बैठा, तो समझो वहीं चिपक गया। ज़्यादातर महिलाएँ भी वहीं बैठे-बैठे अपनी चटनी, भर्ता तैयार कर लेती हैं।

हर दिन की तरह बच्चे आज भी सूखी लकड़ियाँ इकट्ठा कर लाए। काम से लौटने के बाद सभी लोग अलाव के आसपास आकर बैठ गए। लोग एक-दूसरे से सटकर बैठते जा रहे थे। धीरे-धीरे आग को घेरे हुए कई गोले बन गए – बच्चों के अलग और बड़ों के अलग।

पेज 4 पर जारी...



कड़कड़ा

2

क्रेत्रवरी 2025

चक्मकँ



खंड बार
सूत्र

कडकड़ाती ठण्ड में पेट... - बृजेश	2
कला के आयाम - शोफाली जैन	7
गणित है मज़ेदार - वर्गों और आयतों से पेंटिंग - आलोका कान्हेरे	11
एक विद्रोह ऐसा भी... - लल्लाजी पटेल का...	
- सी एन सुब्रह्मण्यम्	15
नर पते - साबुनः एक इलाज - शिक्षा	17
ये बात समझ में आई नहीं - अहमद हातिब सिद्धीकी	20
मैं पतरंगी - कविता तिवारी	24
तुम भी बनाओ - प्रोजेक्टर - प्रभाकर डबराल	26
क्यों-क्यों	28
मेहमान जो कभी गर्य ही नहीं - भाग 8	
- आर एस रेशू राज, स पी माधवन व साथी	30
भूलभुलैया	31
माथापच्ची	32
चित्रपहेली	34
मेरा पत्रा	36
तुम भी जानो	43
महुआ - कनक शशि	44

आवरण चित्र: कनक शशि

सम्पादक	डिजाइन
विनता विश्वनाथन	कनक शशि
सह सम्पादक	सलाहकार
कविता तिवारी	सी एन सुब्रह्मण्यम्
विज्ञान सलाहकार	शशि सबलोक
सुशील जोशी	वितरण
उमा सुधीर	झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क

(रजिस्टर्ड डाक सहित)

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

एकलव्य

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,

वेबसाइट: <https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/बैंक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी
accounts.pitara@eklavya.in पर जरूर दें।

पेज 2 से आगे...

किससों-कहानियों का दौर शुरू हुआ। कहीं किसी ठेकेदार से मज़दूरी के भुगतान को लेकर झगड़े की बात। कहीं किसी बंगले के मालिक द्वारा काम करवा के कम पैसे देने पर बहसबाजी की बात। कहीं काम के दौरान अपने ही साथी की टाँग खिंचाई, तो कहीं किसी का मज़ाक उड़ाने की बात। कभी किसी गम्भीर मसले पर एकदम स्नाटा छा जाता, तो कभी अचानक जोरदार ठहाकों की आवाज गूँजती।

गान्धारी बोला, “आज हम लोगों ने मिलकर पाँच हज़ार रुपए में एक बड़ी नाली खोदने का ठेका लिया। काम जल्दी निपटाने के लिए हम सब काम में जुट गए। बिना आराम किए काम करते रहे। हमने चार बजे तक पूरा काम खत्म कर दिया। जब मज़दूरी देने की बारी आई तो ठेकेदार आनाकानी करने लगा। उसे लगा कि इन्होंने तो बहुत जल्दी काम खत्म कर लिया। जब कुबलु ने ठेकेदार को ज़ोर-से हड़काया तब कहीं उसने पूरे पैसे दिए।” सभी लोग टकटकी लगाए किससे सुन रहे थे।

मेरी बस्ती के सभी बड़े लोग रोज़ाना सुबह-सुबह हाथ में गेंती-फावड़ा लेकर काम की तलाश में पीठे (मज़दूरों का अड़डा) की तरफ निकल जाते हैं। ठण्ड हो, बारिश हो या गर्मी हो सभी को अपने काम के लिए निकलना ही पड़ता है। यदि पीठे पर पहुँचने में देरी हुई तो काम ही नहीं मिलता है। ठेकेदार मज़दूरों को लेकर चला जाता है। कई बार तो जल्दी जाने पर भी खाली हाथ लौटना पड़ता है। जिस दिन काम नहीं मिलता, उस दिन उधारी लेकर सौदा खरीदना पड़ता है। तब कहीं रात का खाना पकता है। हमारे लोगों की हालत तो ऐसी है कि रोज़ कुआँ खोदो और रोज़ पानी पियो।

मेरे पापा भी कड़कड़ाती ठण्ड में काम पर जाते हैं। उनके शरीर पर सिर्फ एक पतला कुरता

और एक गमछा ही होता है। सोचता हूँ, “पापा एक पतला कपड़ा पहनकर भी कड़कड़े की इस ठण्ड से कैसे बचते हैं? क्या उनको ठण्ड नहीं लगती?” एक दिन पापा का काम मेरे पहले वाले स्कूल के पास लगा था। वे अपने दोस्तों के साथ कॉलोनी के लोगों के घरों में पानी की पाइप लाइन बिछाने के लिए नाली खोद रहे थे। छुट्टी में हम सभी दोस्त अपने पापा से बात करने चले गए। छुट्टी की घण्टी कब बजी पता ही नहीं चला। मास्साब हमको बुलाने आए। ज़ोर-से चिल्लाते हुए बोले, “क्यों तुम्हें घण्टी की आवाज नहीं सुनाई दी?” मैंने देखा कि हमारे मास्साब तो दो स्वेटर पहनकर भी काँप रहे थे, जबकि मेरे पापा पसीने से तरबतर हो रहे थे। लगातार गेंती चलाने से ठिठुरा देने वाली ठण्ड में भी उनके शरीर से पसीना बह रहा था।

उस रात जब पापा काम से लौटे तो मैंने उनको नहाने के लिए हैँडपम्प का गुनगुना पानी लाकर दिया। हमारी बस्ती में नल नहीं हैं। सभी लोग हैँडपम्प से ही पानी भरते हैं। दाई ने रोज़ की तरह उनको काली चाय बनाकर दी। पापा चाय पीकर अपने दोस्तों के साथ बतियाने के लिए बैठ गए। मैं भी दोस्तों की एक टोली में बैठकर कहानी सुनने लगा। बहुत मज़ा आ रहा था।

तभी दाई ने मुझे खाना खाने के लिए आवाज़ दी। मैं उठकर घर आ गया। रात के खाने में माँ ने बकरे की आँत की सब्ज़ी बनाई थी। मटन-चिकन बहुत



महँगा होता है तो बस्ती के अधिकांश घरों में मुर्गी के पैर, मुण्डी, छाँटन और बकरे की आँत ही बनती हैं। सस्ती भी और जायकेदार भी। मुझे भी ज़ोर की भूख लग रही थी। आँत की सब्जी के साथ मैं दो रोटी ज़्यादा ही खा गया।

खाना खाने के बाद ठण्ड ज़्यादा लगती है। मैं भी झट-से कम्बल में धुसकर सो गया। घर में एक ही कम्बल है। हम दोनों भाई उसी में धुसकर सोने के लिए झगड़ा करते हैं। मेरा भाई दाई से सटकर सो गया था। मुझे किनारे में सोना पड़ा। जो किनारे में सोता, उसको ज़्यादा ठण्ड लगती। उस दिन ठण्ड भी कुछ ज़्यादा ही पड़ रही थी। दाई तो सिर्फ पुरानी गोदड़ी ओढ़कर सोई हुई थीं।

रात में सोते समय भाई ने कम्बल अपनी तरफ खींच लिया। मैं उघड़ गया। ठण्ड से मेरी नींद खुल गई। भाई धुटने अपनी छाती से चिपकाए गठरी बनकर सो रहा था। पटिए से बने टाटी (दरवाज़ा) की सेंध से ठण्डी हवा भी बिना बुलाए मेहमान की तरह घर में धुसी चली आ रही थी। बर्फ-सी ठण्डी हवा ने मेरे पैरों को एकदम सुन कर दिया था।



बहुत कोशिश करने पर भी ठण्ड के कारण नींद नहीं आ रही थी। जैसे-जैसे रात गहरा रही थी, ठण्ड बढ़ती ही जा रही थी।

आधी रात में मेरे पेट में गुड़गुड़ होने लगी। मुझे लैट्रिन लगने लगी। दो रोटी ज़्यादा खाई थीं, उसी का परिणाम था यह। ठण्ड की रात में यदि लैट्रिन लग जाए तो बहुत मुश्किल हो जाती है। पहले तो मैंने बहुत देर तक रोकने की कोशिश की। लेकिन जब बहुत ज़ोर-से लगने लगी तो मैंने सोचा अब तो नाले तरफ जाना ही पड़ेगा। हमारी बस्ती में सभी लोग नाले पर बैठकर ही लैट्रिन करते हैं।

अपनी सारी हिम्मत बटोरकर मैं घर के बाहर निकला। रात बहुत डरावनी लग रही थी। पूरी बस्ती में सन्नाटा पसरा हुआ था। हाड़-माँस गला देने वाली ठण्डी हवा चल रही थी। कुत्ते अलाव की बुझ चुकी आग की राख में सिकुड़कर बैठे हुए थे। वे राख की गर्मी से अपनी ठण्ड भगा रहे थे। जिनको गरम राख नहीं मिली वो ठण्ड के कारण रो रहे थे।



ठिठुरते हुए मैं नाले की तरफ बढ़ा। नाला देखकर और ज्यादा डर लगने लगा। मुझे याद आया कि उसी नाले में मेरे दोस्त कबीर के पापा मरे थे। लैट्रिन करते वक्त उन्हें चक्कर आ गया था और वे नाले में गिरकर मर गए थे। वो भी ठण्ड का ही मौसम था। मैं जैसे-तैसे नाले के पास पहुँचा और पानी का डिब्बा नीचे रखा। तभी हमारे मोहल्ले का कुत्ता कालू मेरे पास आकर ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा। प्रदीप मोटू ने दिन में उसको बहुत परेशान किया था, शायद उसी बात से नाराज़ था।

मैंने हिम्मत करके उसको हट किया। लेकिन वो तो टस से मस नहीं हुआ। कालू मेरे बहुत करीब आकर भौंकने लगा। अब मैंने वहाँ से भागने में ही अपनी भलाई समझी। सिर पर पैर रखकर भागा। नाले की तरफ गहरा अँधेरा था। भागने के चक्कर में मैं नाले में गिर गया। हड़बड़ाकर उठा और सरपट घर की ओर भागा। मैं ज़ोर-ज़ोर से “ओ दाई वो, ओ दाई वो” चिल्लाते हुए भाग रहा था। कालू भी मेरे पीछे दौड़ा। उसने घर तक मेरा पीछा किया।

मेरी आवाज़ सुनकर दाई और पापा घबराकर घर से बाहर आए। दाई ने कालू को भगाया। इतनी रात में मेरी आवाज़ सुनकर पूरा मोहल्ला जाग गया। दाई ने मुझे हँडपम्प पर ले जाकर नहलाया। फिर काली चाय बनाकर पिलाई और अपने से विपकाकर सुलाया। तब जाकर मेरी ठण्ड भागी। डर की वजह से मेरी नींद और लैट्रिन दोनों हवा हो गई थीं। दाई ने मुझे कहानी सुनाई। तब कहीं मुझे नींद आई।

सुबह जब मैं जागा तब तक सारा मोहल्ला जाग चुका था। कोहरे के कारण सूरज भी चाँद की तरह दिख रहा था। मेरी भाभी और बाकी सब दोस्त मेरा मज़ाक बनाने लगे। मुझे भी हँसी आ गई। रात की सारी बात मुझे सपने जैसी लग रही



थी। लेकिन मेरा घुटना सूजा हुआ था। घुटने की छोट से रात के हादसे का यकीन हुआ। छोट बहुत तकलीफ दे रही थी। वैसे भी ठण्डी में छोट बहुत दर्द करती है।

मेरे सभी दोस्त स्कूल के लिए तैयार हो चुके थे। मैं भी जल्दी-से तैयार हो गया। हम सभी बैन में बैठकर स्कूल के लिए निकले। रास्ते में ठण्डी हवा नाक और कान में घुस रही थी। गाड़ी में हम सब ठिठुर रहे थे। सबकी नाक ओले जैसे ठण्डी हो रही थीं। सर्द हवा की फुरफुरी से सभी बच्चों के दाँत किटकिटा रहे थे। बच्चे अलग-अलग राग में अपने दाँत किटकिटा रहे थे, जिससे मधुर संगीत बन रहा था। दाँत किटकिटाना बच्चों के लिए एक खेल हो गया था। हँसते-हँसाते हम स्कूल पहुँच गए।

उस दिन ठण्ड कुछ ज्यादा ही थी। सभी बच्चे काँप रहे थे। बच्चों ने लकड़ियाँ इकट्ठी कर आग जलाई और झुण्ड बनाकर आग तापने बैठ गए। धीरे-धीरे बच्चों के अलग-अलग घेरे बनते गए। जब बच्चे अपनी कक्षाओं में नहीं पहुँचे तो टीचर दीदी बच्चों को बुलाने आई। दीदी धीरे-से बोली, “बच्चो, चलो क्लास में।” बच्चों का आग के पास से उठने का मन हो नहीं रहा था। बन्दना बोली, “दीदी बहुत ठण्ड लग रही है। यहीं पढ़ा दो ना।” दीदी मुस्कराई और वहीं बैठकर बच्चों को पढ़ाने लगी। आग के पास बैठकर पढ़ने में मज़ा ही आ गया।

कला के आयाम

नीरव संध्या का शहर

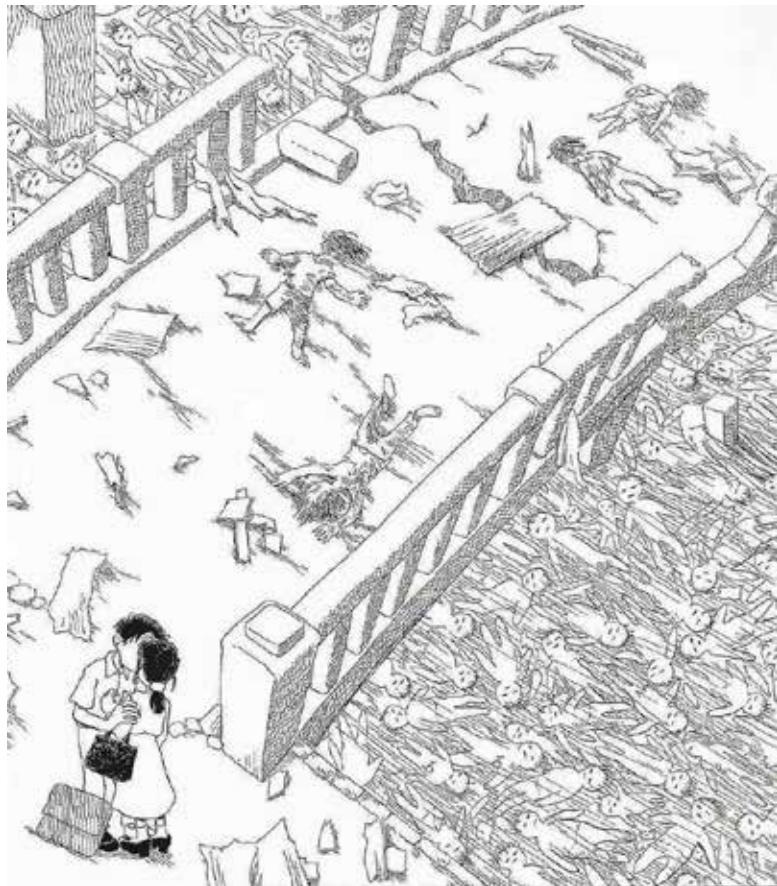
शेफाली जैन

नीरव संध्या का शहर कोनो फुमियो द्वारा लिखी और चित्रित की हुई माँगा है। यह हिरोशिमा पर गिराए गए परमाणु बम के दीर्घकालीन असर की कहानी है। जापानी कॉमिक्स को माँगा कहते हैं। कॉमिक्स चित्रकथाएँ होती हैं जिन्हें सिलसिलेवार पैनल्स की सहायता से बनाया जाता है। जापानी माँगा और दूसरी कॉमिक्स के बीच एक बड़ा फर्क है। माँगा पैनल्स को दाईं से बाईं तरफ पढ़ा जाता है, जबकि दूसरी सब कॉमिक्स को हम बाईं से दाईं तरफ पढ़ते हैं। इसलिए अगर तुम कोनो फुमियो की यह कॉमिक्स पढ़ोगे तो इस कॉमिक्स को अन्तिम पने से पढ़ना शुरू करना होगा। क्योंकि यह उसका पहला पना होगा। यह किताब कई भाषाओं में उपलब्ध है।

जब भी मैं यह कहानी पढ़ती हूँ, तो मुझे रोना आ जाता है। साथ ही मुझे युद्ध के खिलाफ आवाज़ उठाने की एक नई प्रेरणा भी मिलती है। हिरोशिमा की कहानी है ही इतनी दर्द भरी। कोनो फुमियो ने इस दर्द और बच्चों पर हुए युद्ध के भयानक असर पर एक बहुत ही संवेदनशील और मार्मिक माँगा बनाई है। फुमियो का कहना है कि “जिस विश्व में जापान और हिरोशिमा स्थित है, उसी विश्व में प्रेम करने वाले सभी पाठकों के लिए” यह माँगा मैंने लिखी है। वे माँगा की शुरुआत में ही हम से उन घटनाओं के प्रति जिम्मेदारी लेने का आग्रह करती हैं जो हमारे विश्व में घट रही हैं।

कथानक

मिनामी ने अपने पिता और छोटी बहन मिदोरी को अमरीका द्वारा हिरोशिमा पर 6 अगस्त 1945 को गिराए परमाणु बम के कारण हमेशा के लिए खो दिया। उसकी माँ, भाई, बहन और वह खुद किसी



चित्र 1.

तरह उस समय बच गए। मगर उन पर परमाणु बम के ज़हरीले असर के कारण जल्द ही मिनामी की बहन कासुमि भी चल बसी। उसके छोटे भाई आसाहि को बुआ के पास रहने भेज दिया गया था। फिर पाँच साल बाद जब उसे वापस लेने गए तो उसने आने से इन्कार कर दिया। वह बुआ को ही अपनी माँ समझने लगा था तो उसे उन्हीं के पास छोड़ना ठीक समझा गया। अब मिनामी और उसकी माँ एक बस्ती में रहते हैं। माँ सिलाई करके कुछ कमा लेती हैं और मिनामी ऑफिस में कलर्क का काम करती है।

यादों का बोझ और वर्तमान का सामना

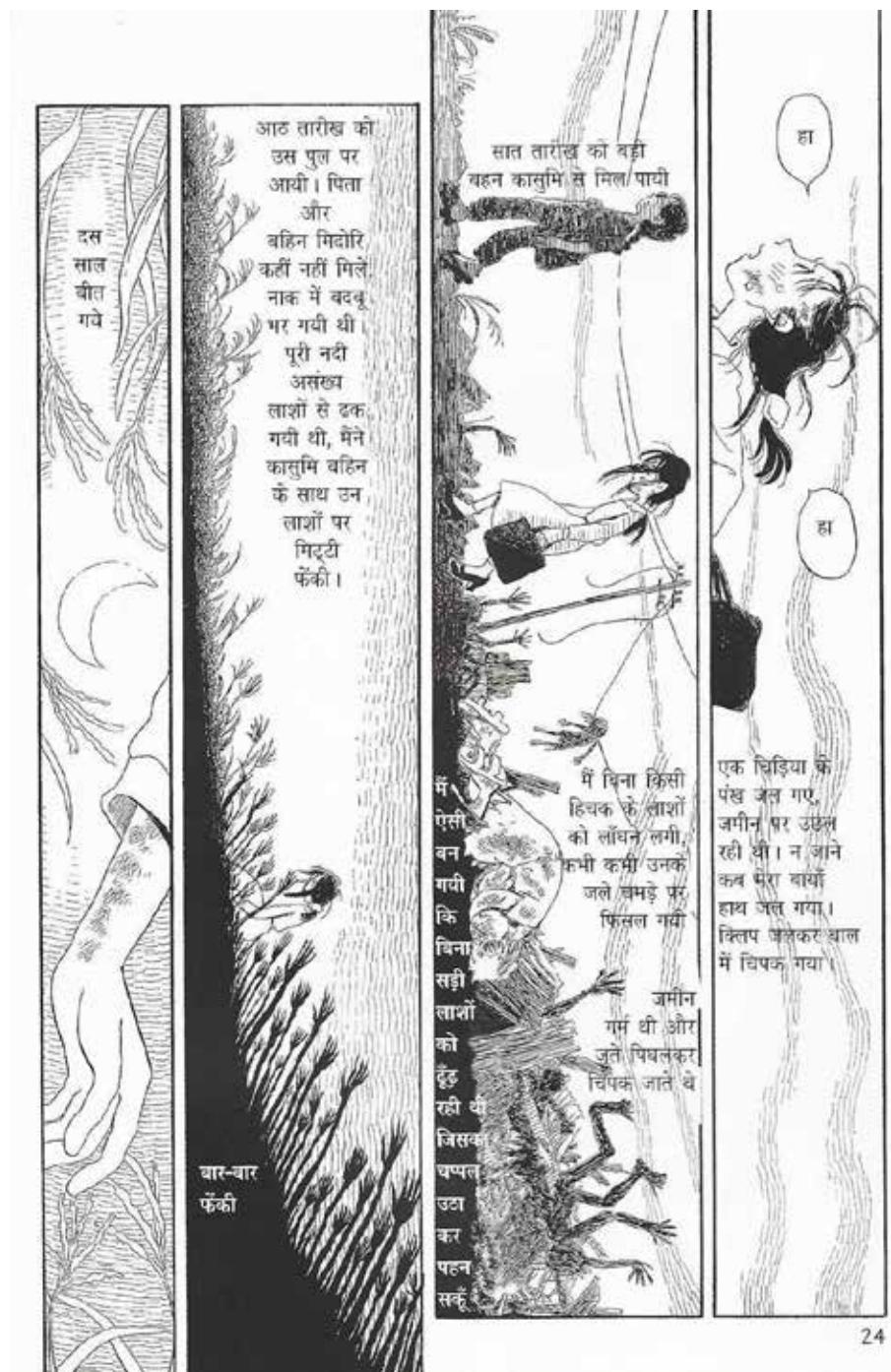
हिरोशिमा पर बम गिराए जाने के दस साल बाद भी मिनामी अपने पिता और अपनी बहनों को नहीं भुला पा रही है। उसे बार-बार वे खौफनाक यादें घेर लेती हैं। वह ऑफिस से घर लौटते वक्त दो बहनों को साथ खेलते देखती है और उसे अपनी बहनें याद आ जाती हैं। स्नानागार में जब वह शहर की अन्य औरतों को रोज़मरा की बातें करते सुनती है और उनके शरीर पर परमाणु विकिरण से जलने के निशान देखती है तो उसे ताज्जुब होता है कि,

“कोई उस दिन की बात नहीं करता।”

ऑफिस का एक लड़का उचिकोषी उसे चाहता है। पर जब वह मिनामी को यह बताता है और अपनी चाहत जताता है तो मिनामी को फिर से उस दिन की यादें और दहशत घेर लेती हैं – लाशों से भरी वह नदी, जलते मलबे में फँसे लोग, जलती चमड़ी की बूंद, दीवार के नीचे दबा हुआ उसका सहपाठी जिसकी वह मदद नहीं कर पाई। इन सबका ख्याल आते ही वह उचिकोषी को धक्का देकर दूर करते हुए चिल्लाती है,

“माफ करना, उस दुनिया में नहीं रह सकती!” (चित्र 1)

कोनो फुमियो इस वाकए को कॉमिक पैनल्स में कुछ निराले प्रयोगों और तब्दीलियों के ज़रिए बड़े भावुक ढंग से पेश करती हैं। जैसे ही मिनामी उचिकोषी को दूर धकेलकर भागती है, कुछ ही कदम भागने के बाद वह गिर पड़ती है। गिरने पर 6 अगस्त की यादें उसे जकड़ लेती हैं। ये खौफनाक यादें उसे पैरों से सिर

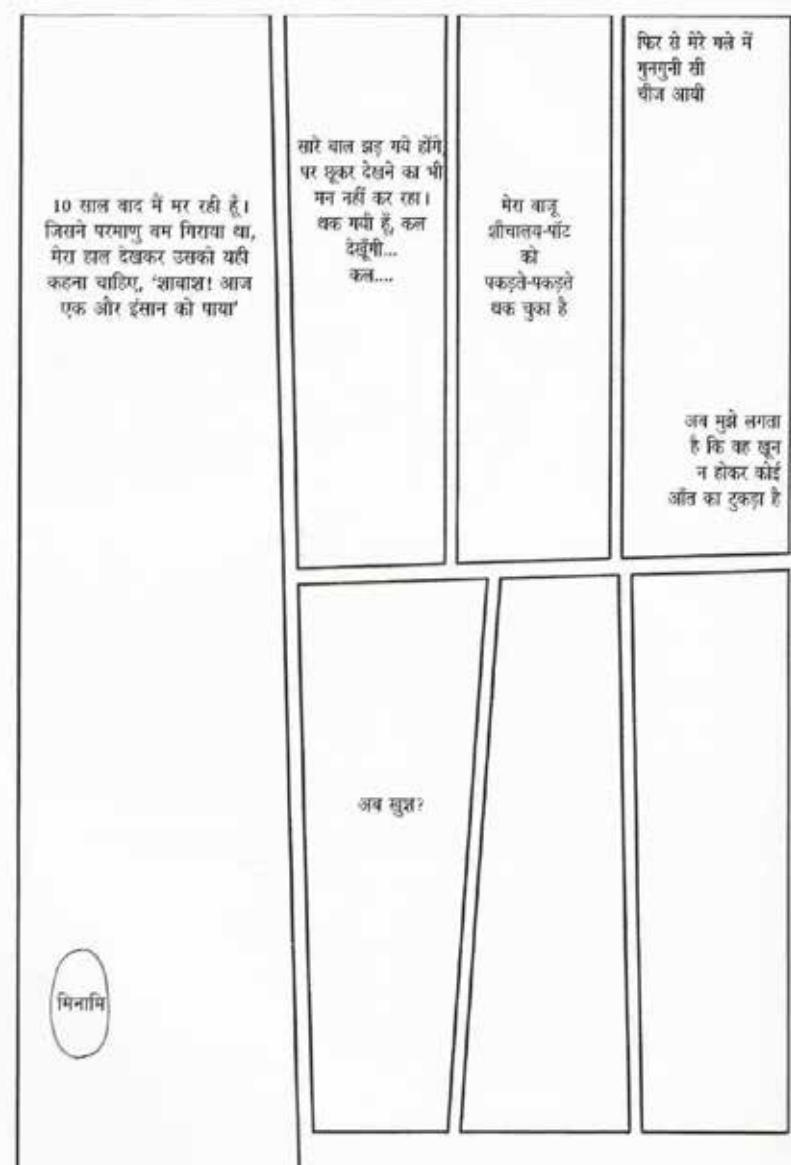


चित्र 2.

तक अपनी चपेट में ले लेती हैं। इस दहशत को दर्शाने के लिए फुमियो कॉमिक्स के कॉमिक्स पैनल को अकस्मात ही 90 डिग्री पर खड़ा कर देती हैं (चित्र 2)। अब हमें मिनामी गुरुत्वाकर्षण (ग्रेविटी) के खिलाफ ऊपर की ओर भागने की कोशिश करते दिखती है। एक असम्भव कोशिश जो उसे पूरी तरह थकाकर ध्वस्त कर देती है। पाठक भी उसे देखने के लिए या तो गर्दन या फिर किताब को 90 डिग्री मोड़ने पर मजबूर हो जाते हैं। और इसके बाद हम अचानक फिर से पैनल को सामान्य स्थिति और 180 डिग्री पर मुड़ा यानी आँड़ी स्थिति में देखते हैं। मिनामी घास और कीचड़ में लिपटी गिरी पड़ी है और कह रही है,

“जब भी मुझे सुख और सौन्दर्य का एहसास होता है, अपने प्रिय शहर और प्रियजनों की याद आती है। तब कोई मुझे जबरन उसी दिन की दुनिया में ले जाता है, जिस दिन मेरा सब कुछ खो गया था। कोई मुझे बताता है कि तुम इस दुनिया में नहीं रह सकतीं।”

मिनामी का मन ग्लानि से भरा है। परमाणु बम की विनाशकारी शक्ति के सामने वह कुछ नहीं कर सकती थी। पर फिर भी उसे लगता है कि वह अपने परिवार को नहीं बचा पाई और इसलिए अब वह किसी खुशी या प्यार के लायक नहीं। वह उचिकोषी के प्यार को चाहकर भी नहीं अपना सकती। 6 अगस्त के दिन मिनामी की माँ ने कुछ नहीं देखा क्योंकि उनकी आँखें रेडिएशन से सूजकर बन्द हो गई थीं। पर छोटी मिनामी ने सब कुछ देखा। वह उस दिन को चाहकर भी नहीं भुला पा रही।

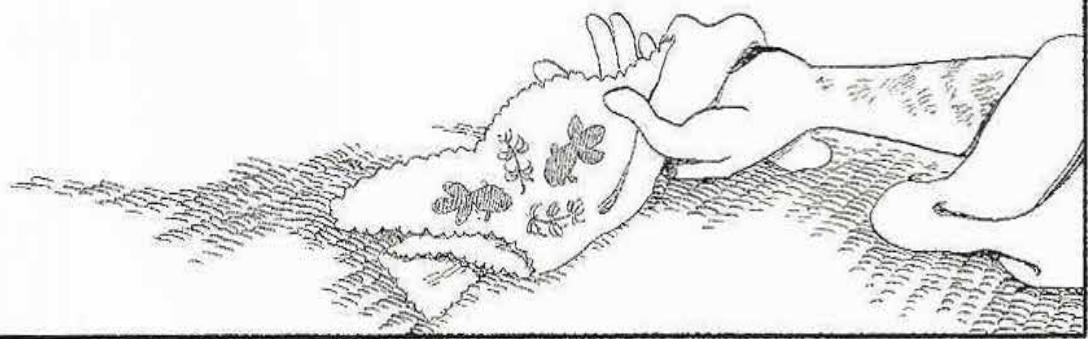


चित्र 3.

युद्ध का दीर्घकालीन असर

अखबार या फिर समाचार हमें ये ज़रूर बताते हैं कि युद्ध में इतने सैनिक मारे गए, इतने आम लोग मारे गए, इस देश ने इतने हथियार खरीदे, यह दूसरा देश उससे भी ज्यादा और ताकतवर हथियारों से लेस है और किस देश की जीतने की सम्भावना है वगैरह-वगैरह। पर दुनिया भर में आज तक जितने भी युद्ध हुए हैं, उनका हमारे मन-मस्तिष्क पर क्या प्रभाव पड़ा है, इस पर कम ही बात होती है।

चाहे कितनी बार यूनागि पूरा हो जाये,
यह कहानी पूरी नहीं होती।



34

चित्र 4.

हिरोशिमा और नागासाकी पर गिराए परमाणु बम के कारण उसी समय तो अनगिनत लोग मारे ही गए। पर बाद में भी जापान की कई पीढ़ियों को शारीरिक और मानसिक दिक्कतों का सामना करना पड़ा। माँगा के अन्त में मिनामी खुद बीमार पड़ जाती है। हादसे के दस साल बाद रेडिएशन का असर उस पर भी हावी हो रहा है। उसकी हालत बिगड़ती जाती है और वह आँखों की रौशनी भी खो देती है। चूँकि हम यह कहानी उसकी जुबानी सुन रहे हैं। इसलिए अब माँगा के पैनल्स में हमें केवल मिनामी के विचार दिखते हैं। पैनल की बाकी जगह खाली है (चित्र 3)। हमें भी मिनामी की तरह उसके आसपास के लोग और चीज़ें दिखनी बन्द हो जाती हैं। कोनो फुमियो हमें इस तरह मिनामी की खोई हुई दृष्टि और उसके अकेलेपन और मायूसी का एहसास दिलाती हैं। मिनामी सोच रही है,

“10 साल बाद मैं मर रही हूँ। जिसने परमाणु बम गिराया था, मेरा हाल देखकर उसको यही कहना चाहिए, ‘शाबाश ! आज एक और इन्सान को पाया।’”

हवा चलने लगी है और यूनागि (शाम की नीरवता) पूरा हो गया है। उचिकोषी अकेला और मायूस बैठा है। लेकिन यह कहानी अभी खतम नहीं हुई है। अगले पैनल में हवा एक पोस्टर उड़ाए ले जा रही है। पोस्टर पर लिखा है – ‘परमाणु निरस्त्रीकरण विश्व सम्मलेन, हिरोशिमा और विश्व शान्ति की शक्ति’। फिर हमें मिनामी का हाथ दिखता है। उसके हाथ में वह रुमाल है जो उसे उचिकोषी ने दिया था (चित्र 4)।

“चाहे कितनी बार यूनागि पूरा हो जाए, यह कहानी पूरी नहीं होती।”

अगर तुम्हें युद्ध पर सवाल उठातीं और भी माँगा पढ़नी हैं तो कोनो फुमियो ने नीरव संध्या का शहर के बाद साकुरा का देश भी लिखी है। यह माँगा इसी कहानी को आगे ले जाती है। इस सन्दर्भ में केयजी नाकाज़वा की ‘बेयरफुट जेन’ माँगा सीरीज़ ज़रूर पढ़ना। इस विषय पर कुछ जापानी एनिमे (फिल्म) भी बनी हैं, जैसे इसाओ ताकाहाता की ग्रेव ऑफ फायर फ्लाइस। फिलहाल हम ऐसे माहौल में जी रहे हैं, जहाँ फिर से विश्व स्तर पर युद्ध छिड़े हुए हैं। ये किताबें और फिल्में हमें इन मसलों पर विचार साझा करने और विश्व शान्ति के प्रति हमारी जिम्मेदारी की फिर से याद दिलाने में मदद कर सकती हैं।



गणित है

वर्गों और आयतों से पेंटिंग

आलोका कान्हेरे

अनुवाद: कविता तिवारी, चित्र: मधुश्री

मन्दिराम

इस चित्र में तुम्हें
क्या दिखाई
दे रहा है?

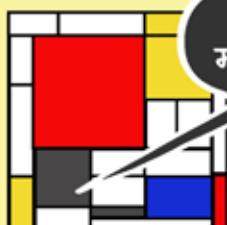
तुम्हें इसमें कई सारे आयत और वर्ग दिखाई दिए होंगे। तुम शायद सोच रहे होगे कि यह गणित की कोई पहली है। वैसे तुम ठीक ही सोच रहे हो।

लेकिन यह जानकर तुम्हें हँसानी होगी कि यह मशहूर पेटर पीट मॉन्ड्रियन (Piet Mondrian) की एक पेंटिंग है!

पीट मॉन्ड्रियन - जन्म: 7 मार्च 1872, नीदरलैंड - मृत्यु: 1 फरवरी 1944, न्यूयॉर्क। मॉन्ड्रियन ने आधुनिक अमूर्त कला के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे डच अमर्त कला आन्दोलन 'डी स्टाइल' के प्रमुख समर्थक थे। वे अपनी व्यामितीय पेंटिंग्स के लिए जाने जाते हैं, जिनमें मुख्य स्पष्ट से सीधी रेखाएँ, आयत और प्राथमिक रंगों (लाल, पीला, नीला) का उपयोग होता था। उनके कार्यों ने कला की परिभाषा और दृष्टिकोण को नया आयाम दिया।

आज हम सब भी
मॉन्ड्रियन बनने जा रहे हैं।

क्यों ना हम भी मॉन्ड्रियन की तरह पेंटिंग बनाएँ, लेकिन इन दो शर्तों के साथ:

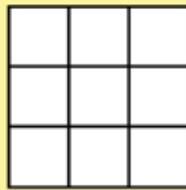


1 तुम्हें पूरी ग्रिड को आयतों और वर्गों से भरना है। पर ना तो कोई खाली लगह होनी चाहिए, और ना ही कोई ओवरलैपिंग होनी चाहिए।

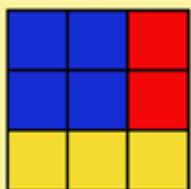


2 इस्तेमाल किए जाने वाले आयत समान लम्बाई-चौड़ाई के नहीं होने चाहिए। यानी कि तुम 4×5 और 5×4 दोनों का इस्तेमाल एक साथ नहीं कर सकते। पर तुम समान क्षेत्रफल वाले दो ऐसे आयत उपयोग कर सकते हो, जिनकी लम्बाई-चौड़ाई अलग-अलग हो। जैसे कि दो इकाई क्षेत्रफल वाला कोई वर्ग या आयत।

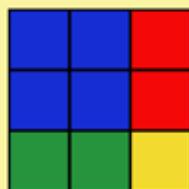
तो चलो, 3×3 के वर्ग से शुरू करते हैं।



हमें इस वर्ग से मॉन्डियन पेंटिंग बनानी है। नीचे दो पेंटिंग ढी गई हैं।



इस्तेमाल किए गए आयतः
 $2 \times 2, 2 \times 1, 1 \times 3$



इस्तेमाल किए गए आयतः
 $2 \times 2, 2 \times 1, 1 \times 2, 1 \times 1$



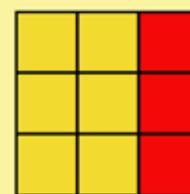
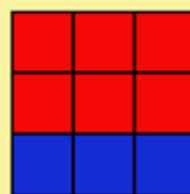
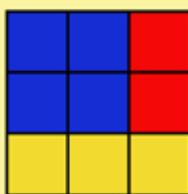
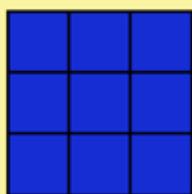
क्या तुम्हें इनमें कोई गलती दिखाई दे रही है?

ध्यान-से देखो दूसरी पेंटिंग गलत है।

क्योंकि इसमें 2×1 और 1×2 दोनों आयत एक साथ इस्तेमाल किए गए हैं।
शर्त के अनुसार ऐसा नहीं कर सकते।

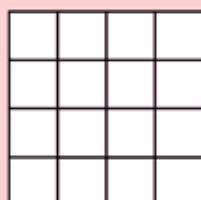
क्या 3×3 के वर्ग से तुम कुछ और मॉन्डियन पेंटिंग बना सकते हो?

इसके कुछ उदाहरण ये हैं:



3×3 के वर्ग से अलग-अलग कितनी मॉन्डियन पेंटिंग बनाई जा सकती हैं? करके देखो।

चलो, अब 4×4 के वर्ग में मॉन्डियन पेंटिंग बनाकर देखते हैं।



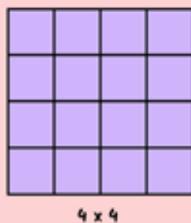
लेकिन यहाँ हमें सभी सम्भावित चित्रों को खोजने का एक तरीका निकालना होगा।

पहले हम उन सभी आयतों और वर्गों को लिख लेते हैं जिनका उपयोग हम इन चित्रों को बनाने के लिए कर सकते हैं।

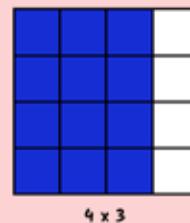
एक तो 4×4 का वर्ग है।

आँख?

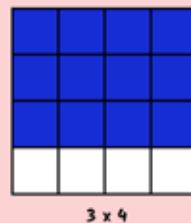
4×3 (या 3×4),
 4×2 , 4×1



4×4

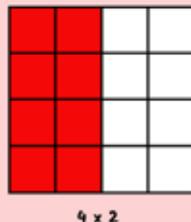


4×3

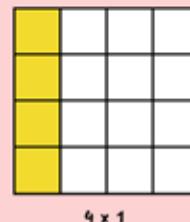


या

3×4



4×2



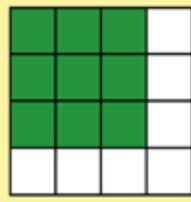
4×1

ये कुल ५ आयत हुए।

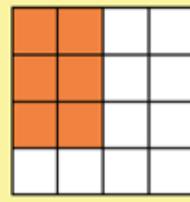
फिर 3×3 , 3×2 और 3×1 के 3 आयत।

साथ ही, 2×2 और 2×1 के 2 आयत।

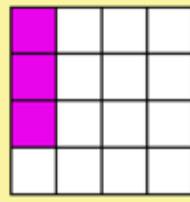
और अन्त में, 1×1 का 1 आयत।



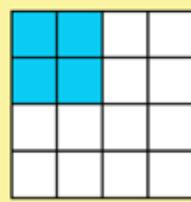
3×3



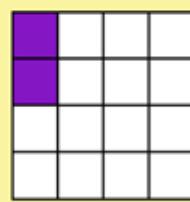
3×2



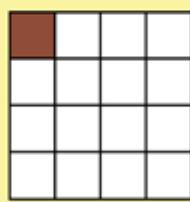
3×1



2×2



2×1



1×1

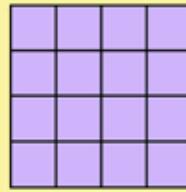
कुल मिलाकर हमारे पास $4 + 3 + 2 + 1 = 10$ आयत हैं, जिनका उपयोग हम मॉन्ड्रियन चित्र बनाने के लिए करेंगे।

हम जानते हैं कि 4×4 के वर्ग का क्षेत्रफल 16 वर्ग इकाइयाँ हैं, यानी वर्ग के अन्दर कुल 16 खाने हैं। इसलिए आयतों और वर्गों का जो भी संयोजन हम चुनें, उनका कुल क्षेत्रफल भी 16 होना चाहिए।

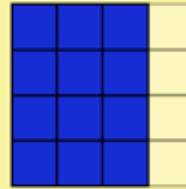
तो चलो हम इन 10 आयतों का क्षेत्रफल निकाल लेते हैं।

क्र.	आयत	क्षेत्रफल (खानों की संख्या)
1		4×4 16
2		4×3 12
3		4×2 8
4		4×1 4
5		3×3 9
6		3×2 6
7		3×1 3
8		2×2 4
9		2×1 2
10		1×1 1

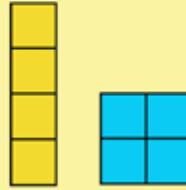
तो हम 4×4 का आयत (जो असल में एक वर्ग है) इस्तेमाल कर सकते हैं।



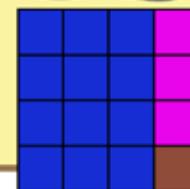
यदि हम 4×3 के आयत का उपयोग करें तो? तो यह 16 में से 12 खानों को कवर कर लेगा। अब हमें ऐसे आयत या आयतों की तलाश करनी होगी जो 4 खानों को कवर कर लें।



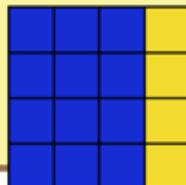
हमारे पास ऐसे दो आयत हैं जिनका क्षेत्रफल 4 खाने हैं, 4×1 और 2×2 ।



यदि 4×3 , 3×1 और 1×1 आयतों का इस्तेमाल करें तो क्या होगा? क्या हम इनसे एक मॉन्ड्रियन पेटिंग बना पाएँगे?



4×3 और 4×1 के आयत मिलकर 4×4 के वर्ग को कवर करते हैं। 4×3 (12 खाने) और 2×2 (4 खाने) के आयत मिलकर 16 खानों का क्षेत्रफल बनाते हैं, लेकिन वे 4×4 के वर्ग को कवर नहीं करते।



इस विचार का उपयोग करके 4×4 के वर्ग से और मॉन्ड्रियन पेटिंग बनाओ। 4×4 के वर्ग से कुल 10 मॉन्ड्रियन पेटिंग बनाई जा सकती हैं। क्या तुमने सारी बना ली?



4×4 और 5×5 के वर्ग के लिए बनाई अपनी मॉन्ड्रियन पेटिंग हमें अलगा मत भूलना।

मध्य प्रदेश के आगर ज़िले में एक छोटा-सा गाँव है देवगुराडिया। यह मालवा के सोंधवाड़ा इलाके में है जहाँ सोंधिया बोली बोलने वाले रहते हैं। उन दिनों यह कोई खास सम्पन्न इलाका नहीं था। मोटे अनाज उगाने वाले गरीब किसान और भेड़-बकरी, गाय और ऊँट के चरवाहे ही यहाँ रहते थे। इस गाँव के एक पटेल या मुखिया थे, लल्लाजी। वे खुद अहीर जाति के थे।

बात सन 1831 की है। तब यह इलाका ग्वालियर के सिंधियाओं के अधीन था। कुछ ही साल पहले सिंधिया अँग्रेजों के अधीन हो चुके थे। उससे लगे हुए इलाकों में इन्दौर के होलकरों का राज था और वे भी अँग्रेजों के अधीन हो चुके थे। गाँव-गाँव में इन राजाओं के अधिकारी या कमाविसदार होते थे जो लगान वसूल करते और हिसाब-किताब रखते थे। और गाँव-गाँव की खबर रियासतों के राजाओं को पहुँचाने के लिए खबर देने वाले भी होते थे। वे समय-समय पर चिट्ठी लिखकर गाँव में होने वाली घटनाओं की खबर देते थे।

सितम्बर के महीने में दरबारों को भेजी गई इन चिट्ठियों में एक अजीब खबर बताई गई। खबर ये थी कि देवगुराडिया गाँव के अहीर जात के लल्लाजी हैजा के मरीज़ों को चमत्कारी ढंग से ठीक कर रहे हैं। उस समय उस इलाके में हैजे का प्रकोप रहा होगा। बड़ी संख्या में लोगों को दस्त लग रहे थे और कई लोग मर रहे थे। ऐसे में यह खबर गाँवों में फैल रही थी और दूर-दूर के गाँवों से हज़ारों की संख्या में लोग पैदल या बैलगाड़ियों में देवगुराडिया पहुँच रहे थे। लल्लाजी बीमारों को हाथ से छूते या उन पर पानी छिड़कते या पिलाते और लोग स्वस्थ महसूस कर रहे थे। देखादेखी दूसरी बीमारियों से परेशान लोग भी वहाँ आने लगे। लल्लाजी उन्हें भी ठीक कर रहे थे।

ये बातें सुनकर पास के नरसिंहगढ़ रियासत के एक दीवान प्रताप सिंह अपने बीमार बेटे को लेकर पहुँचे। उनका कहना था कि लल्लाजी ने उस बेटे को एकदम स्वस्थ कर दिया। इस चमत्कार से प्रभावित होकर प्रताप सिंह ने उन्हें खूब सारे पैसे और एक पालकी दी। इसके बाद दूसरे ज़मींदार आदि भी लल्लाजी के पास आने लगे। देवगुराडिया में उमड़ती भीड़ को देखकर सेठ, व्यापारियों और तमाशेबाज़ों ने वहाँ पहुँचकर अपनी दुकान और तम्बू गाड़ लिए, जैसा कि वे मेलों में करते थे।

वैसे ये बातें कुछ दो-चार महीने पहले से शुरू हो गई थीं। मगर सितम्बर के पहले हफ्ते में कुछ नई बातें सामने आने लगीं। लल्लाजी अब गाँव के बाहर मैदान में बड़े तम्बुओं में रहने लगे। चारों तरफ झण्डे लहरा रहे थे। एक तम्बू में धूनी जल रही थी जिसकी रखवाली कुछ सिपाही कर रहे थे। कहा जाने लगा कि यह धूनी खण्डे राव देव की है जिन्होंने लल्लाजी को अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा है। लल्लाजी खुद एक शाही मसन्द पर बैठने लगे जैसे वे कोई राजा हों। और राजाओं की तरह उनके तम्बू के बाहर नगाड़े और नौबत बजने लगे। लल्लाजी घोषणा करने लगे कि वे ‘नए राजा’ हैं, ‘आलीजा बहादुर’ हैं।

देखते-देखते चमत्कारी इलाज करने वाले राजा होने का दावा करने लगे। अब जो भी लोग आते, वे लल्लाजी को भेंट या नज़राना देने लगे। गाँव के लोग मिलकर अपने गाँव के मुखियाओं या पटेलों के हाथ नारियल और अपनी औकात के अनुसार चार-पाँच रुपए भेंट भेजते थे, जिसे लल्लाजी को दिया जाने लगा। चिट्ठियों में यह खबर भी दी गई कि रोज इस तरह हज़ार रुपए तक इकट्ठे हो रहे थे।



लल्लाजी देवगुराडिया गाँव, नवादा ज़िले, मध्य प्रदेश

लल्लाजी इतने पैसों का क्या करते थे। कुछ पैसों से तो वे लोगों के खाने के लिए अनाज खरीदते थे और बाकी का उपयोग घोड़े खरीदने, तलवार-भाले या बन्दूक खरीदने और सैनिकों को वेतन देने के लिए कर रहे थे। यब भी खबर फैली कि जो लोग उनका कहा नहीं मानते थे उनको तरह-तरह की परेशानी हो रही थी। यहाँ तक कि वे लोग मर भी रहे थे। कहीं-कहीं उनका नाम लेकर राहगीरों की लूटपाट भी हो रही थी।

लल्लाजी अब कहने लगे कि वे खण्डे राव देव के प्रतिनिधि हैं और दशहरे के दिन देव प्रगट होंगे और राजकाज सँभालेंगे। वे अँग्रेजों को मालवा से क्या कलकत्ते से भी भगा देंगे। उन्होंने आसपास के ज़मींदारों से कहा कि वे सब इस अभियान में शामिल हों और अपने पैसे, घोड़े, हथियार और सैनिक लेकर आ जाएँ। उनका मुख्य उद्देश्य अँग्रेजों को भगाना है। उन्होंने सिंधिया और होलकर राजाओं को भी सन्देश भेजा कि वे देव के सामने मत्था टेक दें तो उन्हें उनका राज्य वापस दे दिया जाएगा।

इस बीच देवगुराडिया में एक सेना इकट्ठी होने लगी। सौ से अधिक घोड़े, सैकड़ों सैनिक और लड़ने के लिए तैयार हज़ारों किसान और चरवाहे। उनके समर्थक ज़्यादातर गरीब थे जो कमतर मानी गई जातियों के थे। वे सब भले ही सीधे अँग्रेज़ी शासन के तहत नहीं रह रहे थे, मगर वे सब यह समझ रहे थे कि उनके पुराने राजा जैसे सिंधिया या होलकर लाचार हैं और अँग्रेजों के नियंत्रण में हैं। उनकी राजधानी में अँग्रेजों के एजेंट बैठे थे जो रोज़ के कामकाज की निगरानी रखते थे। उनके सैनिकों की टुकड़ियाँ भी तैनात थीं। तो लल्लाजी ने लोगों से कहा कि हमें अँग्रेजों को भगाना है और खण्डे राव देव दशहरे के दिन प्रगट होकर सेना की अगुआई करेंगे।

इस बीच अँग्रेज़ी रेसिडेंट को लल्लाजी के बदलते तेवर के बारे में खबर पहुँचने लगी। एक रिपोर्ट में उसे बताया गया कि लल्लाजी के गाँव में कितने लोग इकट्ठा हो रहे हैं, वहाँ कितने सेठ-साहूकार और व्यापारी दुकान लगाए हैं, उनके पास कितने घोड़े, सैनिक और बन्दूक हैं आदि। अँग्रेज अधिकारी समझ रहे थे कि सिंधिया या होलकर लल्लाजी को दबाने के लिए तैयार नहीं होंगे, आखिरकार उनकी प्रजा लल्लाजी को चमत्कारी दैवी व्यक्ति मान रही थी।

लल्लाजी भी अपना अभियान तेज़ करने लगे। पूरे इलाके के गाँववालों को कहा गया कि वे लगान नहीं चुकाएँ और लगान केवल खण्डे राव देव के प्रगट होने के बाद उन्हें दें। किसान भी इस बात से खुश थे। उन्हें फिलहाल कुछ राहत तो हुई कि लगान की किश्त अभी नहीं भरना है। गाँवों में तनाव की स्थिति बनने लगी। सेठ-साहूकार जो किसानों को लगान चुकाने के लिए उधारी देते थे, अब उन्हें उधार देने से मना करने लग गए। वे भी शायद यह सोचने लगे कि लल्लाजी अँग्रेजों और उनकी कठपुतलियों को भगा पाएँगे।

जैसे-जैसे सितम्बर का महीना आगे बढ़ा और दशहरा पास आते गया, यह खबर दूर-दूर तक फैल गई। मालवा के एक बड़े इलाके में किसान और गाँव के मुखिया लल्लाजी के साथ होने लगे। लल्लाजी ने अपने साथ आने वाले ज़मींदारों को सख्त हिदायत दी कि वे लूटमार न करें और आम किसानों को किसी प्रकार परेशान न करें। यह और बात है कि ये ज़मींदार उनके आदेश को मानें या नहीं।

बात जब यहाँ तक पहुँची तो अँग्रेज अधिकारियों ने तय किया कि इस विद्रोह को आगे बढ़ने नहीं देना है। इन्दौर स्थित रेसिडेंट ने अपने अधिकारी को आदेश दिया कि वह तोप-बन्दूक सहित सेना की एक टुकड़ी देवगुराडिया पर चढ़ाई के लिए भेजे और दशहरे से पहले ही विद्रोह को कुचल दे। सिंधिया राजा ने भी अपने स्थानीय अधिकारी को आदेश दिया कि अँग्रेज़ी सेना की मदद करे।

पृष्ठ 25 पर जारी...



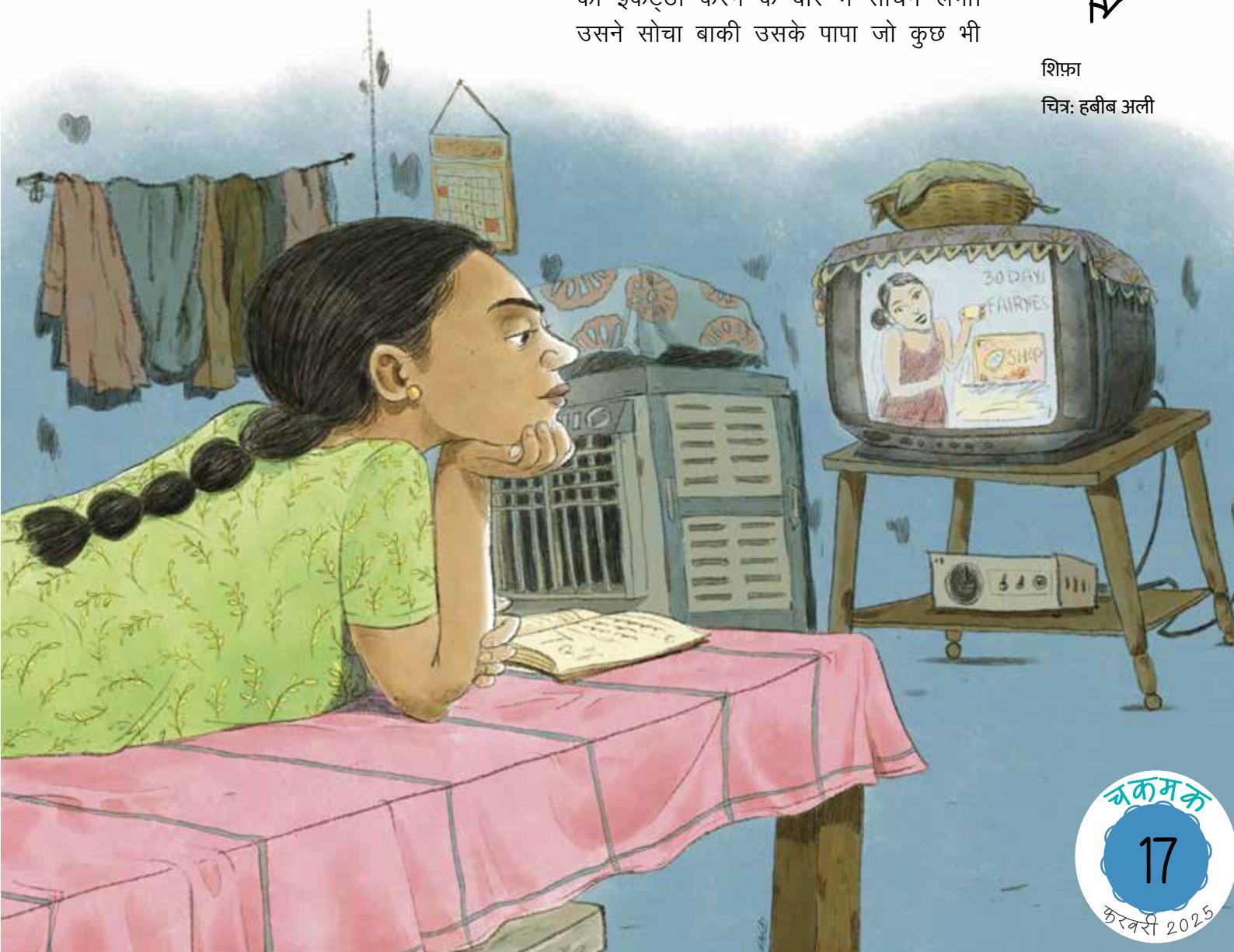
शिफ्टा सुभाष कैम्प की मस्जिद वाली गली में रहती है। उसका बर्थडे अभी जून में ही निकला है। वह पन्द्रह साल की हो गई है। जब से वह दसवीं में आई है, अपने ऊपर कुछ ज़्यादा ही ध्यान देने लगी है। उसने अपना नया इंस्टाग्राम अकाउंट बनाया है। और रील बनाकर उस पर डालना भी शुरू कर दिया है। जो लड़की बिना मैचिंग का दुपट्टा ओढ़कर बाहर चली जाती थी, वह अब बालों पर बिना कंधा फेरे घर से निकलती नहीं है। पहले वह दो मिनट में तैयार होकर मस्जिद चली जाती थी, अब पाँच मिनट तक तो मुँह ही धोती रहती है। तब जाकर हिजाब पहनती है।

एक दिन वह दोपहर के समय लेटी हुई टीवी देख रही थी। तभी टीवी पर एक विज्ञापन आया। विज्ञापन एक साबुन के बारे में था। विज्ञापन बता रहा था कि यह साबुन चेहरा धोने के लिए है। यह सुनते ही शिफ्टा उठ बैठी और उस विज्ञापन को गौर-से देखने लगी। उस साबुन की कीमत पचास रुपए थी। दाम सुनते ही वह परेशान हो गई। इतने पैसे तो उसके पास थे नहीं।

उसकी अम्मी पहले से ही उसकी चमक-दमक की आदत से परेशान थीं। वह सोचने लगी कि कैसे पचास रुपए इकट्ठे करके ये साबुन खरीदे। वह कुरानख्वानी से मिले पैसों को इकट्ठा करने के बारे में सोचने लगी। उसने सोचा बाकी उसके पापा जो कुछ भी

शिफ्टा

चित्र: हबीब अली



देंगे, उनको भी वह इकट्ठा कर लेगी। कुछ ही दिनों में उसके पास पचास रुपए इकट्ठे हो गए। वह परचून की दुकान पर गई। उसने परचून वाले से कहा, “टीवी पर जिस साबुन का विज्ञापन आता है ना, वह साबुन मुझे दे दो।”

दुकानवाले ने कहा, “टीवी पर तो बहुत से साबुन के ऐड आते हैं, तुम्हें कौन-सा चाहिए?”

शिफ़ा ने कहा, “अरे! वही, जिसमें हीरोइन आती है।”

दुकानवाला बोला, “वह तो पचास रुपए का है। तुम्हारे पास इतने रुपए हैं?”

शिफ़ा ने कहा, “हाँ हैं। तुम साबुन तो दो।”

दुकानवाले ने उसे साबुन दिया। वह साबुन लेकर घर आ गई। नए साबुन को कभी वह सूँघती, तो कभी उसे अपने गालों पर लगाती। उसने उस साबुन को छुपाकर रख दिया था, स्लिप के ऊपर। उसने यह बात अपनी अम्मी को भी नहीं बताई। वह नियमित रूप से दिन में कम से कम तीन बार उस साबुन से मुँह धोया करती – सुबह, दोपहर और शाम।

उस रात को शिफ़ा मुँह धोकर सो गई। अगले दिन उठी तो उसके चेहरे पर जलन हो रही थी। वह अपनी अम्मी से जाकर बोली, “देखो ना अम्मी, मेरा चेहरा लाल हो गया है और तेज़ जलन हो रही है।”

अम्मी ने कहा, “तूने क्या लगाया था चेहरे पर?”

उसने कहा, “अम्मी कुछ भी तो नहीं लगाया। पता नहीं कैसे हो गया है?”

अम्मी बोलीं, “ऐसा नहीं हो सकता। जब तक तूने कुछ लगाया न हो, तब तक यह हो ही नहीं सकता।”

तब उसने अपनी अम्मी को बताया कि वह साबुन खरीदकर लाई थी।

अम्मी ने पूछा, “कौन-सा ऐड देखकर ले आई?”

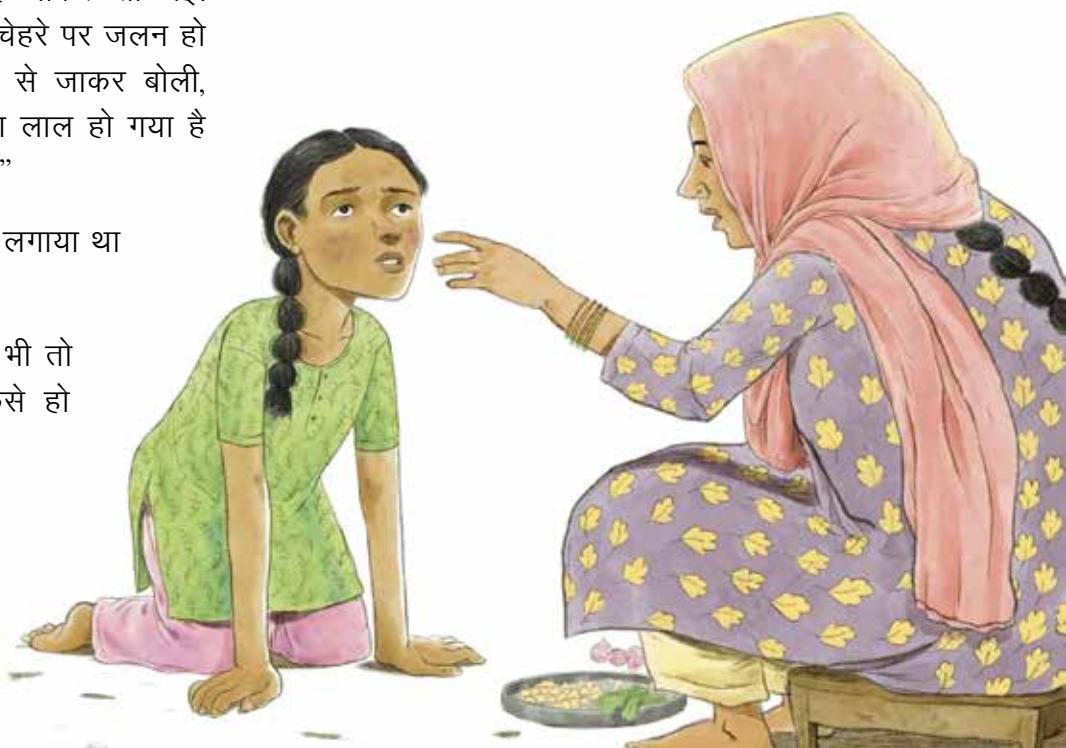
शिफ़ा ने बोला, “अपनी पसन्दीदा हीरोइन के साबुन का ऐड था।”

अम्मी ने कहा, “तेरे पास कहाँ से आए इतने पैसे?”

उसने बोला, “मैं कुरानख्वानी और पापा से मिले पैसों को इकट्ठा करके ले आई थी।”

वह अपनी अम्मी से बार-बार यही कहे जा रही थी, “मेरा चेहरा खराब तो नहीं हो जाएगा ना? मैं फिर रील में काम कर सकूँगी ना? अम्मी, मेरे स्कूल में एक फंक्शन भी है। दो दिन बाद मुझे उसमें डाँस करना है।”

उसकी अम्मी बोलीं, “अभी जाकर ठण्डे पानी से मुँह धो लो।”



शिफ्फा भागते हुए ऊपर गई और फ्रिज से ठण्डा पानी निकालकर अपना मुँह धो डाला। उसके बाद कुछ देर के लिए कूलर के सामने बैठ गई। इससे उसे बहुत ठण्डक महसूस हुई। लेकिन उसे बार-बार जलन हो रही थी और बार-बार ठण्डे पानी से मुँह धोना पड़ रहा था। ऐसा करते-करते पूरा दिन बीत गया।

अगले दिन सुबह उसने उसी साबुन से मुँह धोया तो उसके चेहरे की जलन और बढ़ गई। यह बात जब उसने अपनी अम्मी को बताई तो वे फौरन समझ गई कि शिफ्फा के चेहरे पर जलन एलर्जी की वजह से हो रही है। उन्हें बस यह समझ नहीं आ रहा था कि एलर्जी किस चीज़ से हुई है। कभी वह आसपास फैले गन्दे पानी, कभी धुएँ तो कभी साबुन के बारे में सोचने लगतीं। लेकिन उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। जब शिफ्फा के पापा काम से लौटे तो अम्मी ने सारी बात उनको बताई।

यह बात सुनकर शिफ्फा के पापा ने कहा, “साबुन के कारण हुआ है। उसे दूसरा साबुन मँगवाना होगा।”

अम्मी बोलीं, “इसके लिए कौन-सा साबुन ठीक रहेगा?”

उसके बाद अम्मी ने चेहरे पर मुल्तानी मिट्टी का लेप कर दिया। मगर उसका भी कोई असर नहीं हुआ। बल्कि उसकी तकलीफ ज्यादा बढ़ने लगी तो शिफ्फा को डॉक्टर के पास ले जाया गया। डॉक्टर ने चैक करके कहा कि इसके चेहरे पर इंफेक्शन हो गया है।

अम्मी ने कहा, “इसका क्या इलाज है?”

डॉक्टर ने कहा, “इलाज यही है कि इसको साबुन इस्तेमाल नहीं करना होगा, जब तक मैं न कहूँ।”

शिफ्फा पिछले छह सालों से अंकुर के किताबघर से जुड़ी हैं। वह दक्षिणपुरी की सुभाष बस्ती, मस्जिद वाली गली में रहती हैं। बड़े होते हुए आँखों की परेशानी हुई, लेकिन इनके कान बेहद सक्रिय हो गए हैं। वे जो सुनती हैं उसे रोज लिखती हैं। नई दिल्ली के अम्बेडकर नगर में स्थित राजकीय उच्चतम माध्यमिक कन्या विद्यालय में पढ़ती हैं।



डॉक्टर ने कुछ दवाइयाँ और क्रीम लिखकर दीं।

शिफ्फा ने हफ्ते भर क्रीम लगाई। इस बीच उसने कोई साबुन इस्तेमाल नहीं किया। रोज़ अपना चेहरा पानी से धोती रही। दस दिन बाद डॉक्टर के पास गई। उसके चेहरे पर काले निशान होने लगे थे। तब उन्होंने विशेष प्रकार का साबुन लिखा। मगर वह बहुत महँगा था। क्योंकि उसमें नीम और नीम्बू मिला हुआ था। वह डॉक्टर की पर्ची लेकर घर आ गई।

काफी सोच-विचार करके पापा शिफ्फा को लेकर बस्ती के बाहर वाले केमिस्ट की दुकान पर गए। वहाँ उन्होंने सारी बात बताई। दुकानदार बोला, “डॉक्टर ने जो साबुन लिखा है वह सौ रुपए का है। तीन-चार महीने इस्तेमाल करना होगा। तकरीबन पाँच-छह सौ रुपए का खर्च आएगा।”

पापा खामोशी से केमिस्ट के सामने खड़े हो गए। उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा था। अन्त में केमिस्ट ही बोला, “वैसे नीम और नीम्बू वाले सस्ते साबुन भी आते हैं। बोलो तो वह दे दूँ?”

पापा ने तुरन्त कहा, “हाँ, दे दो।” पापा तो यह सुनकर खुश हो गए। लेकिन शिफ्फा के मन में डर अभी भी बना हुआ था।



ये बात समझ में आई नहीं
और अम्मी ने समझाई नहीं।
मैं कैसे मीठी बात करूँ
जब मैंने मिठाई खाई नहीं
आपी भी पकाती हैं हलवा
फिर वो भी क्यूँ हलवाई नहीं।

ये बात समझ में आई नहीं
और अम्मी ने समझाई नहीं।
नानी के मियाँ तो नाना हैं
दादी के मियाँ भी दादा हैं
जब आपा से मैंने ये पूछा
बाजी के मियाँ क्या बाजा हैं
वो हँस-हँसकर ये कहने लगीं
ऐ भाई नहीं, ऐ भाई नहीं।

ये बात समझ में आई नहीं
और अम्मी ने समझाई नहीं।
जब नया महीना आता है तो
बिजली का बिल आ जाता है
हालाँकि बादल बेचारा
ये बिजली मुफ्त बनाता है
फिर हमने अपने घर बिजली
बादल से क्यूँ लगवाई नहीं।

ये बात समझ में आई नहीं
और अम्मी ने समझाई नहीं।
गर बिल्ली शेर की खाला है
तो हमने उसे क्यूँ पाला है
क्या शेर बहुत नालायक है
खाला को मार निकाला है
या जंगल के राजा के यहाँ
क्या मिलती दूध-मलाई नहीं।

ये बात समझ में आई नहीं

अहमद हातिब सिद्दीकी
चित्र: प्रशान्त सोनी





ये बात समझ में आई नहीं
और अम्मी ने समझाई नहीं।
क्यूँ लम्बे बाल हैं भालू के
क्यूँ उसकी टुण्ड कराई नहीं
क्या वो भी गन्दा चच्चा है
या उसके अब्बू भाई नहीं
ये उसका हेयर स्टाइल है
या जंगल में कोई नाई नहीं।

ये बात समझ में आई नहीं
और अम्मी ने समझाई नहीं।
जो तारे झिलमिल करते हैं
क्या उनकी चच्ची, ताई नहीं
होगा कोई रिश्ता सूरज से
ये बात हमें बतलाई नहीं
ये चन्दा कैसा मामा है
जब अम्मी का वो भाई नहीं

ये बात समझ में आई नहीं
और अम्मी ने समझाई नहीं





मैं पतरंगी...

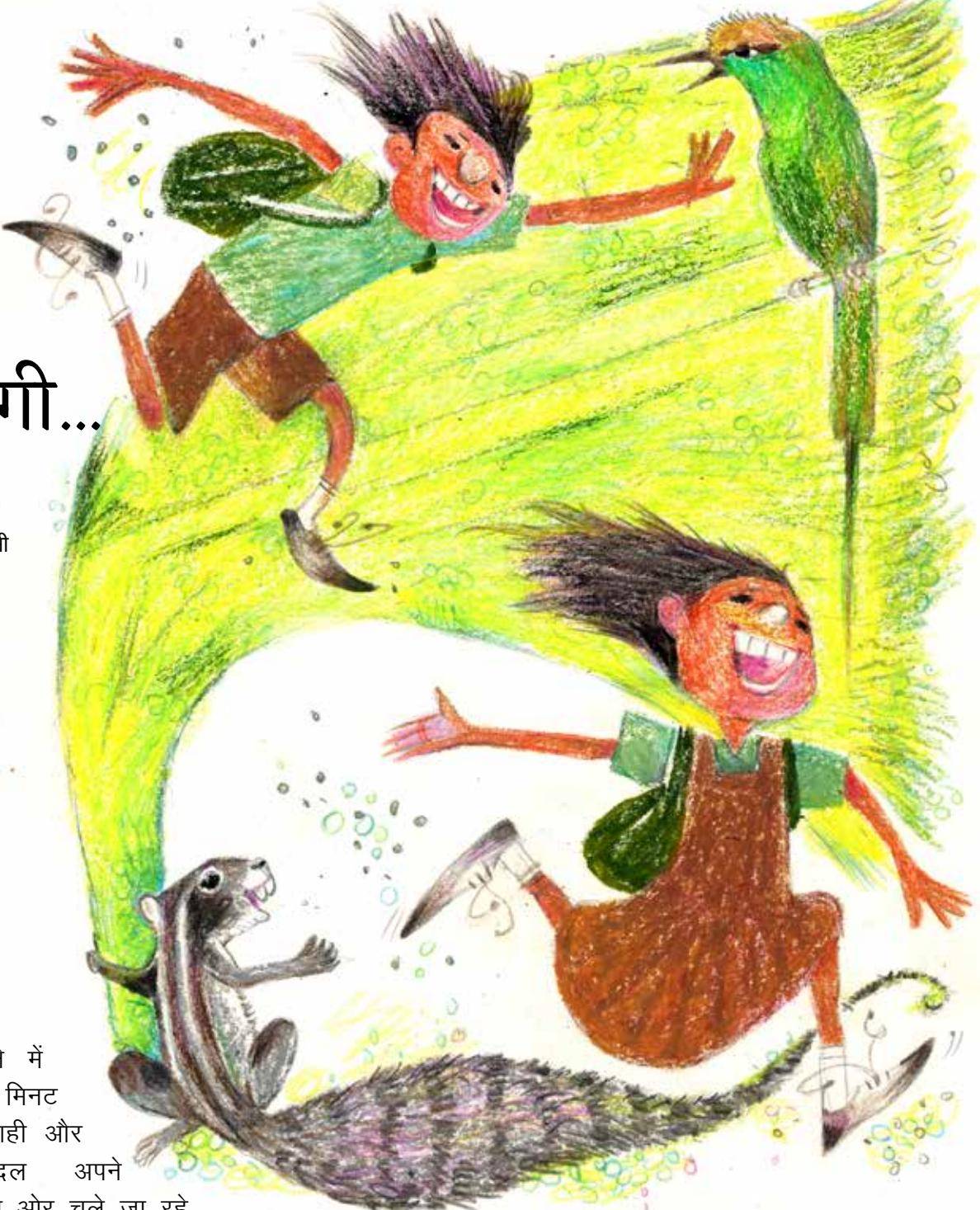
कविता तिवारी

चित्र: प्रशान्त सोनी

गाड़ी आने में
अभी पन्द्रह मिनट
बाकी थे। राही और
अम्बर पैदल अपने

प्लेटफार्म की ओर चले जा रहे
थे। ज्यादा सामान तो नहीं था उनके पास। स्टेशन
पर कुछ खास भीड़ भी नहीं थी। बस उतने ही लोग
थे जितने किसी कर्से के स्टेशन पर आम तौर पर
होते हैं। फिर भी चलना मुश्किल हो रहा था। कदम
आगे बढ़ रहे थे। पर मन पीछे हो रहा था।

“राही, जल्दी कर ना। तू हमेशा लेट करती है,”
अम्बर बोला।



“हाँ, बाबा, बस आ ही रही हूँ” राही बोली। “एक
बात बता, वैसे तो तू इतना आलसी है कि एक
काम तुझसे समय पर नहीं होता। पर तू यह रोज़
स्कूल जाने के लिए एकदम सही टाइम पर कैसे
आ जाता है?”

“स्कूल जाने के लिए कौन आता है, मैं तो घर से
स्कूल तक का ये रास्ता तय करने आता हूँ। और



पेज 16 से आगे...

फिर, रास्ते में तेरी ये चोटियाँ बाँधने के लिए भी तो समय लगता है ना,” अम्बर बोला।

“अच्छा बच्चू, अभी बताती हूँ तुझे,” कहकर राही अम्बर के पीछे दौड़ी।

“अरे! दौड़ा मत, जल्दी स्कूल पहुँच जाएँगे” अम्बर बोला। और दोनों हँसने लगे।

घर से स्कूल का रास्ता तकरीबन बीस मिनट का था। पर जिस दिन स्कूल से जल्दी छूट जाते तो दोनों लम्बे रास्तों से आना पसन्द करते। बातें करने के लिए ज्यादा समय जो मिल जाता।

अम्बर और राही दोनों आठवीं में पढ़ते थे। अम्बर पढ़ने में अच्छा था। लेकिन उसका मन स्कूल की किताबों से ज्यादा कहानी-किस्सों की किताब में लगता। राही को पढ़ने में कुछ खास दिलचस्पी नहीं थी। पर अम्बर को पढ़ता देख उसे अच्छा लगता। वह उसके लिए कहानियों की किताबें खोजकर लाती। दोनों पढ़ने के लिए साथ बैठते। पर थोड़ी ही देर में अम्बर कहता, “चल रहने दे। मुझे पता है तुझे पढ़ने में कोई मज़ा नहीं आता।” राही धीरे-से बोलती, “हाँ, वो तो है। पर पढ़ने का नाटक करने में तो मज़ा आता है।” “नौटंकी कहीं की,” अम्बर बोलता और दोनों खिलखिलाकर हँस पड़ते।

राही तो पूरी नौटंकी ही थी। एक दिन कहने लगी, “मैं पतरंगी बनना चाहती हूँ। देखो, कैसे तारों पर बैठी बतिया रही है।” अम्बर बोला, “तू तो वैसे ही इतना बतियाती है। उसके लिए पतरंगी बनने की क्या जरूरत। पर, हाँ जब तू पतरंगी बन जाएगी तो मैं भी गिलहरी बन जाऊँगा। फिर दोनों पेड़ पर फुदकेंगे। बड़ा मज़ा आएगा।” राही बोली, “फुदकेगा तो तू बुद्ध, मैं तो फुर्र-से उड़ जाऊँगी। लेकिन हाँ, मज़ा तो आएगा। तू मुझे उड़ते देखना।”

तब अम्बर को कहाँ पता था कि राही एक दिन सच में फुर्र-से उड़ जाएगी।



अक्टूबर पहली तारीख को अँग्रेज़ी सेना की एक टुकड़ी देवगुराड़िया पहुँची। उसका सामना पाँच सौ घुड़सवार और अनगिनत पैदल सैनिकों से हुआ। मगर विद्रोही सेना के पास हथियार बहुत कम थे। ज्यादातर ज़मींदार अँग्रेज़ों के तोप देखकर पहले ही भाग गए। अँग्रेज़ों ने तोपों और बन्दूकों की सहायता ली। युद्ध जल्दी ही खत्म हो गया। लल्लाजी और उनके कई सहायक मारे गए। बाकी लोग खेतों में घुसकर बच निकले। अँग्रेज़ों की तरफ से भी कई मरे व घायल हुए। रेसिडेंट को विद्रोही नए राजा की मौत की खुशखबरी मिली। उसने कलकत्ता तार भेजा, “इस दैवी बादशाह की किस्मत में नहीं था कि वह हमारे साम्राज्य को गिराए। वह खुद मिट्टी खाकर लेटा है।”

यह घटना आज भुला दी गई है। मगर इसकी जानकारी हमें उस समय के अँग्रेज़ी दस्तावेज़ों और देशी रियासतों के कागज़ातों में मिलती है। यूरोपीय शासकों के खिलाफ इस तरह के विद्रोह की न यह पहली कहानी थी, न आखिरी। भारत में, चीन में, अफ्रीका में, अमेरिका में लगातार ऐसे विद्रोह हुए। ऐसे कई विद्रोही हुए जो यह मानते थे कि अँग्रेज़ी शासन देवी-देवताओं को भी नापसन्द है और वे इसे समाप्त करने के लिए उन्हें दैवी शक्ति देंगे। अँग्रेज़ों की तोप व बन्दूक उन पर कोई असर नहीं करेंगे। आसपास के दुखियारे, गरीब और लाचार लोग यह बात सुनकर हिम्मत जुटाकर विद्रोह के लिए उनके साथ हुए। कुछ ऐसे ज़मींदार भी विद्रोह में शामिल हुए जिनको उनके पदों से हटाया गया था। मगर उनकी रक्षा करने कोई दैवी शक्ति नहीं आ पहुँची और वे मारे गए। लेकिन विदेशी शासन के खिलाफ घृणा और विद्रोह की भावना लोगों के मन में बनी रही।

(इतिहासकार अमर फारूकी के आलेख पर आधारित)





तुम्हारा बनाओ

प्रोजेक्टर

प्रभाकर डबराल

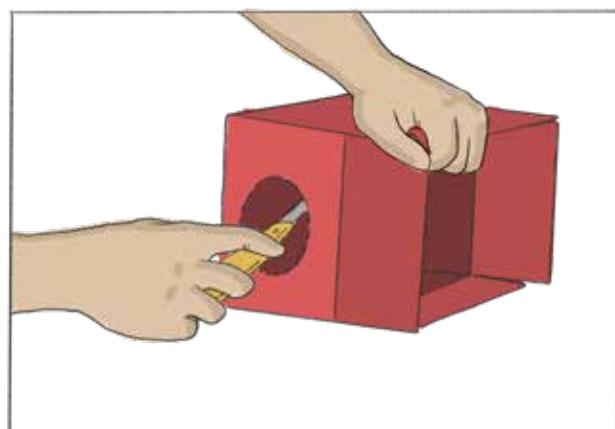
जुगाड़: स्मार्टफोन, जूते का पुराना डिब्बा,
मैग्नीफाइंग ग्लास, फेविकॉल, कटर या कैंची,
काला रंग या मोटा काला कागज़ और ब्रश



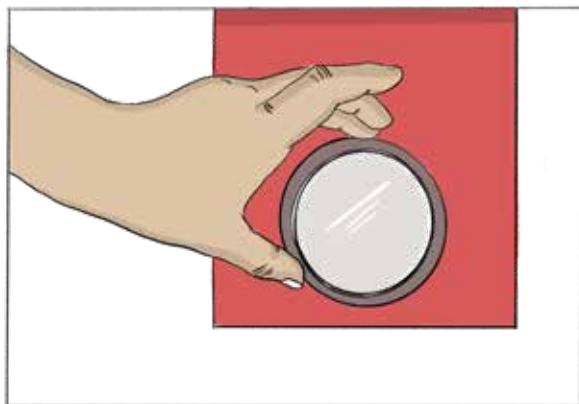
1. गते का एक आयताकार बॉक्स लो, जिसकी चौड़ाई मैग्नीफाइंग ग्लास
की चौड़ाई से थोड़ी ज़्यादा हो और जिसमें तुम्हारा स्मार्टफोन आ जाए।



2. मैग्नीफाइंग ग्लास को बॉक्स के चौड़े हिस्से पर रखकर^र
पेसिल से ग्लास के चारों ओर एक गोला बनाओ।



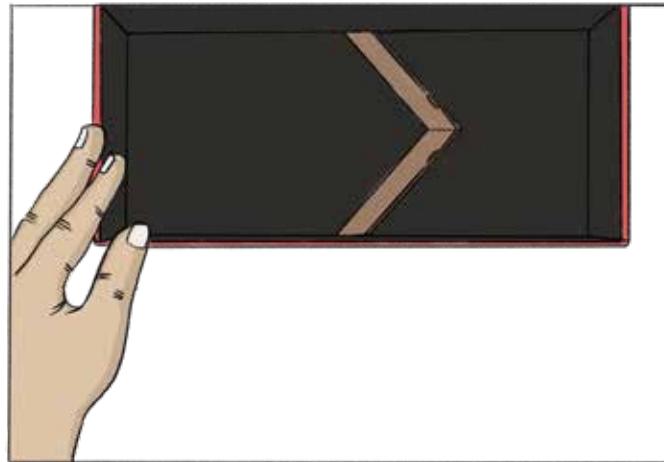
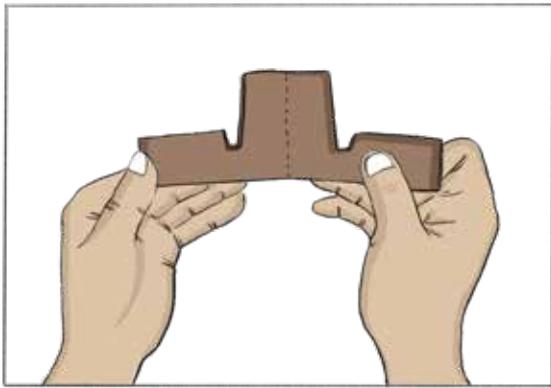
3. कटर या कैंची की मदद से गोले को काट लो।



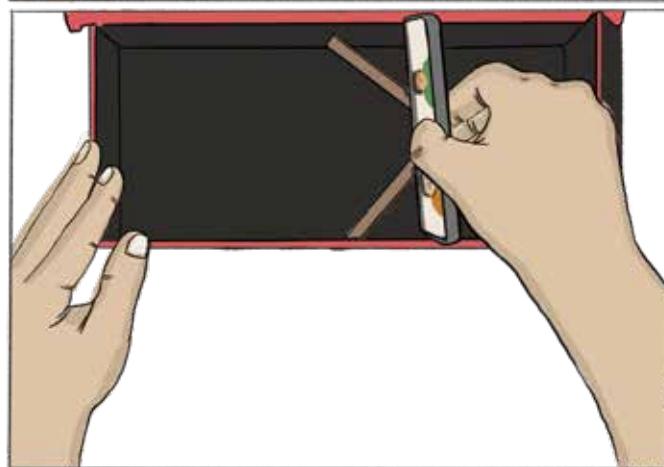
4. मैग्नीफाइंग ग्लास को छेद में डालो। ध्यान रखना कि
ग्लास का उठा हुआ भाग बाहर की ओर हो। फेविकॉल
में आटा मिलाकर, उस पुट्टी से मैग्नीफाइंग ग्लास को उस
जगह पर चिपका लो।



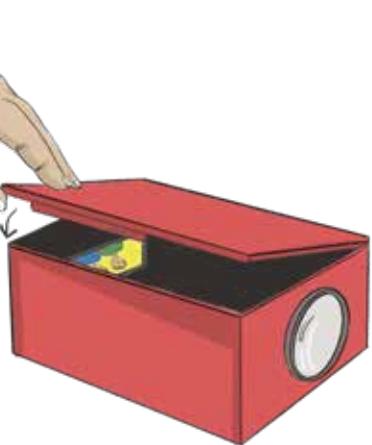
5. रोशनी को अन्दर आने से रोकने के लिए बॉक्स
की सभी भीतरी दीवारों को मोटे काले कागज़ से
ढँक लो या काले रंग से रंग लो।



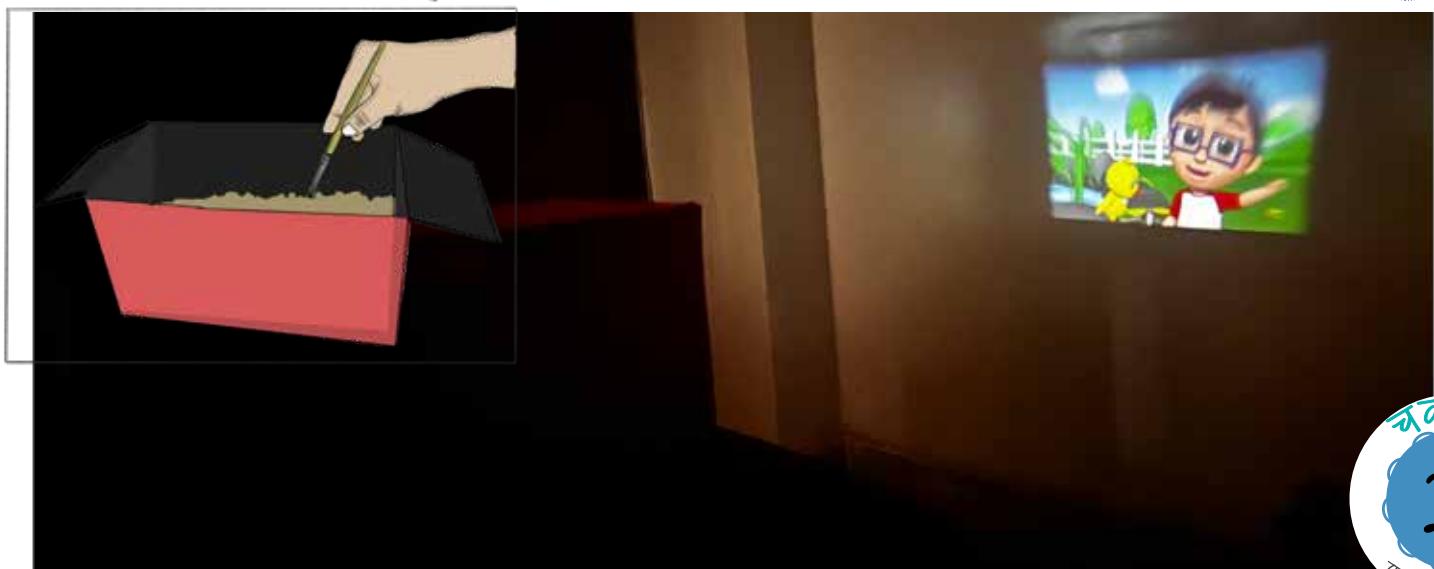
6. फोन रखने का एक स्थिर स्टैंड बनाने के लिए चित्र में दिखाई गई जैसी गत्ते की एक पट्टी काट लो।



7. किसी भी अतिरिक्त रोशनी को अन्दर आने से रोकने के लिए ढक्कन सहित बॉक्स के सभी खुले क्षेत्रों को काले मोटे कागज (या पेंट) से ढँक लो। ऐसे किसी भी गैप या खुले स्थान को टेप से सील कर लो जहाँ से रोशनी अन्दर आ सकती है।



8. अपने फोन को स्टैंड पर रखो। वीडियो चलाओ और बॉक्स पर ढक्कन लगा दो। चैक करो कि पिक्चर दीवार पर कैसी दिखाई देती है। यदि वह धृुँधली है, तो फोन को ग्लास के करीब ले जाकर एडजस्ट कर सकते हैं। इसे ठीक तरह से एडजस्ट करने के लिए थोड़ा प्रयास करना पड़ेगा, लेकिन कुछ ही समय में तुम अपने होम प्रोजेक्टर का उपयोग कर पाओगे।





क्यों-क्यों मैं इस बार का हमारा सवाल था:

चक्रमक में तुम किस-किस तरह की सामग्री पढ़ना-देखना चाहोगे, और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं।
इनमें से कुछ तम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक का सवाल है:

तुमने शायद ध्यान दिया हो कि हमारे आसपास, टीवी, विज्ञापन, किताबों, हॉर्डिंग आदि में गोरे लोगों को ज्यादा दिखाया जाता है। तुम्हें क्या लगता है, ऐसा क्यों है?

तुम्हारा मन करे तो तुम भी अपने जवाब हमें
भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/कॉमिक
बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें
merapanna.chakmak@eklavya.in पर
ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर
डॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी
भेज सकते हो। हमारा पता है:

एकलव्य फाउंडेशन,
जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी, फॉर्दून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश

शानू एकका, आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला परसा, अम्बिकापुर,
सरगुजा, छत्तीसगढ़

चक्रमक पत्रिका में कहानी पढ़ने में बहुत अच्छा लगता है। पर कहानियाँ कम ही मिल रही हैं। साथ ही जो कहानी पूरी करने के लिए दी गई थी वो मुझे समझ ही नहीं आई कि उसमें आगे-पीछे क्या जोड़ँ। इसलिए मज़ा नहीं आया।

अंश अग्रवाल, सातवीं, नर्मदा वैली इंटर्नेशनल स्कूल, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

मैं चक्रमक में विज्ञान, पर्यावरण स्कूल की ज़िन्दगी के बारे में पढ़ना चाहता हूँ।

कियान रमन, सातवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल, पाड़ा, करनाल, हरियाणा

मैं चक्रमक में समुद्री जीव-जन्तुओं के बारे में जानना चाहता हूँ। मुझे यह इसलिए जानना है कि मुझे समुद्री जीव-जन्तुओं के बारे में जानने में दिलचस्पी है। हमें यही नहीं पता कि समुद्र में क्या है और कैसे जानवर हैं। मैं आशा करती हूँ कि समुद्री जीव-जन्तुओं के बारे में चक्रमक में ज्यादा से ज्यादा छपे।

आकृति, छठवीं, अजीम प्रेमजी स्कल, मातली, उत्तराकाशी, उत्तराखण्ड

वक्रमक में कुछ गेम हों ताकि कहानी-कविता आदि पढ़कर यदि हम बोर हो जाएँ तो गेम खेलकर हमारा मन अच्छा रहेगा। कुछ पहेलियाँ होनी चाहिए ताकि हमें पता चले कि हमारा दिमाग कितना तेज़ है। और कुछ फैक्ट होने चाहिए ताकि हमें आसपास के बारे में पता चल सके।

मैं चाहूँगा कि चकमक में एक ऐसा खण्ड हो जिसमें अगर किसी को कष्ट हो या कोई बच्चा परेशान हो तो वो अपनी परेशानी को इस खण्ड में छपवा सके। फिर जो भी इस परेशानी का समाधान ढूँढ सके उसके जवाब को चकमक के अगले अंक में छपवाकर बच्चे की सहायता करें।

समीर, छठवीं, अऱ्जीम प्रेमजी स्कूल, मातली,
उत्तराखण्ड

चकमक में भूत की कहानियाँ नहीं होती हैं, तो वो होनी चाहिए। जो भूत की कहानियाँ होती हैं वो सब पढ़ना चाहते हैं क्योंकि सबको भूत की कहानियाँ सुनने में अच्छा लगता है। और सुडोकू भी होना चाहिए, वो भी बिना आंसर के। तब बच्चे सुडोकू को पीछे से नहीं देखेंगे। दिमाग वाली चीजें जो बच्चों का दिमाग बढ़ाएँ।

सुयज्ञा तिवारी, सातवीं, नर्मदा वैली इंटर्नेशनल स्कूल, नर्मदापुरम,
मध्य प्रदेश

इसमें हमने सारी प्रकार की कहानियाँ पढ़ीं। सारी कहानियाँ अच्छी हैं। लेकिन कोई भी कहानी में शिक्षा नहीं मिलती है। तो मैं चाहती हूँ कि कोई ऐसी कहानी हो जिसमें मज़ा भी आए और शिक्षा भी मिले।

अंकुश, छठवीं, अऱ्जीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

मैं चकमक में लोकगीत पढ़ना चाहता हूँ। उन्हें पढ़कर हमें मज़ा आएगा और उन्हें हम अपने परिवार में किसी को सुना भी सकते हैं। ताकि उन्हें पता चले कि इस गीत से हमने क्या समझा।



चित्र: आलिया परवीन, छठवीं, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

भाग - 8

मेहमान जो कभी गए ही नहीं

अन्य देश से आए और हमारे देश में सफलता से बसे हुए आक्रामक पौधों की सीरिज़ की अगली कड़ी...

आर एस रेश्वर राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन,
दिव्या मुडप्पा, अनीता वर्गीस और अंकिला जे हिरेमथ
रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाम्बेकर



कॉस्मोस (गार्डन कॉस्मोस)

कॉस्मोस (गार्डन कॉस्मोस)

वैज्ञानिक नाम: कॉस्मोस बाइपिन्नेटस
(*Cosmos bipinnatus*)

मूल: मध्य अमेरिका

कैसे पहुँचा: सजावटी पौधे के रूप में
लाया गया

कॉस्मोस का पौधा हर साल खत्म हो जाता है। फिर इसके नए पौधे उगते हैं। यह 1 से 2 मीटर की ऊँचाई तक बढ़ सकता है। इसके तने पतले होते हैं। इसके मिश्रित पत्ते पंखनुमा और एक-दूसरे के सामने होते हैं। कॉस्मोस के नाजुक और आकर्षक गुलबहार जैसे फूल कटोरीनुमा और 5-7 सेंटीमीटर व्यास के होते हैं। ये लम्बे और सीधे छण्ठल पर खिलते हैं। आम तौर पर 8 की संख्या में होने वाली इसकी पॅखुड़ियाँ सफेद से गुलाबी और बैंगनी की विविध रंगतों में हो सकती हैं।





प्रवेश

स्वाभाविक

मूल जानकारी दर्ज नहीं

असर

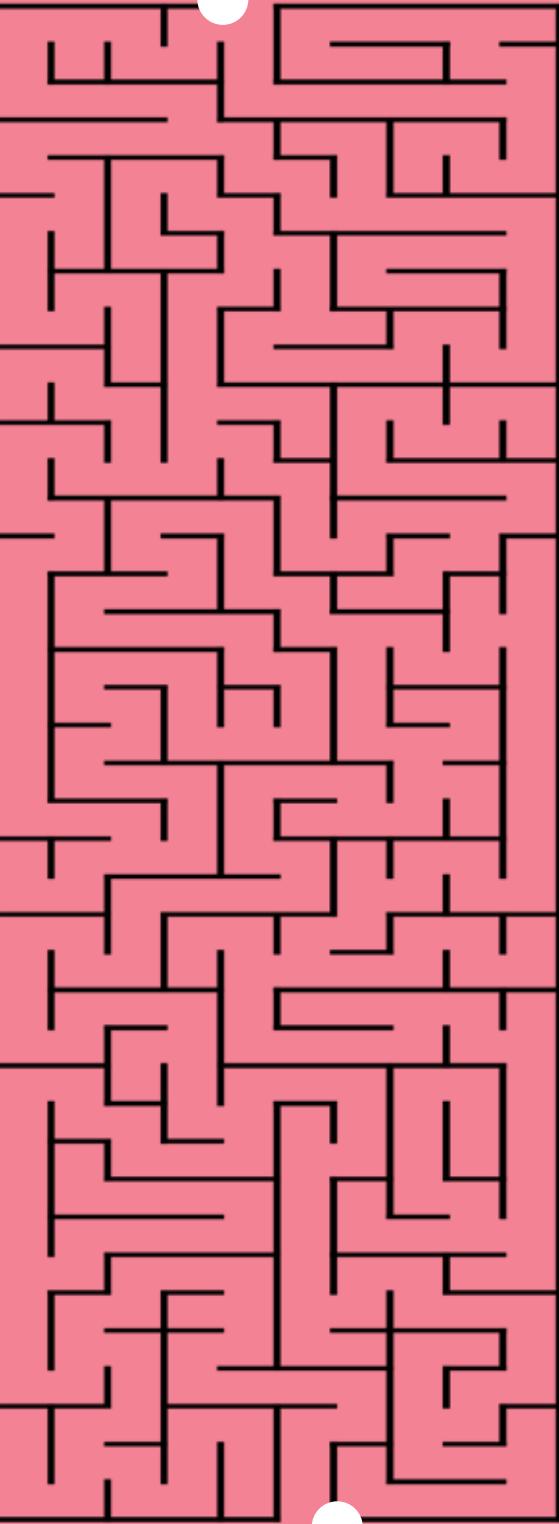
कॉस्मोस के पौधे खुद के बीजों को फैला सकते हैं। इससे यह बगीचों और खेतों की ज़मीन से निकलकर बड़े क्षेत्रों में उग सकता है। इस कारण ये दुनिया के कई हिस्सों में आक्रामक बन गया है।

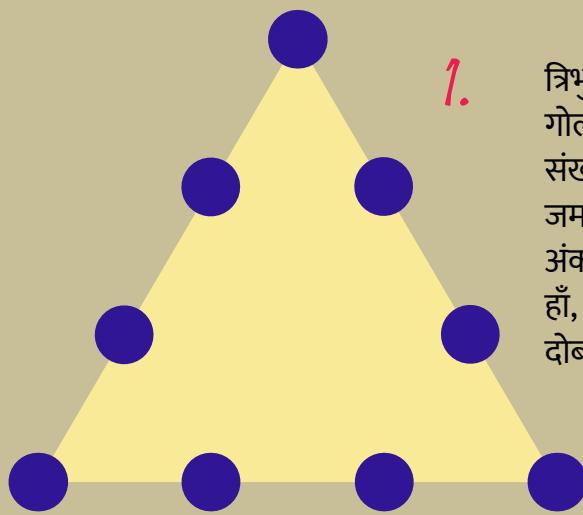
बन्दोबस्त

कॉस्मोस को फूलों के लिए उगाया जाता है। तितलियों के लिए बने बगीचों में भी इसका इस्तेमाल किया जाता है। भविष्य में इसकी खेती और इस्तेमाल से बचना इसे फैलने से रोकने में सहायक हो सकता है।



मुकु





1.

त्रिभुज की भुजाओं के इन गोलों में 1 से 9 तक की संख्याओं को इस तरह जमाओ कि हरेक भुजा के अंकों का जोड़ 17 हो। पर हाँ, तुम किसी अंक को दोबारा नहीं लिख सकते।

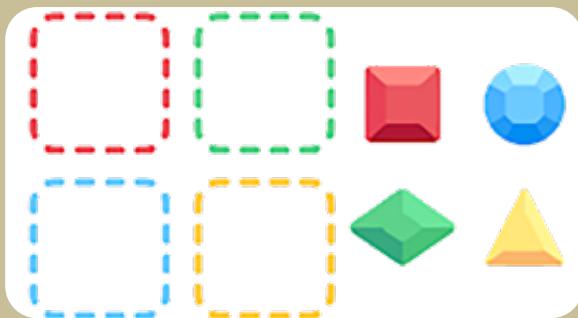


2.

इनमें से किसी चित्र में कोई गड़बड़ लग रही है क्या?

3. इन निर्देशों के आधार पर दी गई आकृतियों को बॉक्स में जमाओ:

- किसी भी बॉक्स में उसकी बोर्डर के रंग से मेल खाने वाले रंग की आकृति नहीं आएगी।
- चौकोर नीचे वाली पंक्ति में नहीं आएगा और त्रिभुज ऊपर वाली पंक्ति में नहीं आएगा।
- गोल और चौकोर अलग-अलग पंक्तियों में आएँगे।



4. सुजैन ने 560 रुपए में एक कोट, एक टोपी और एक जोड़ी दस्ताने खरीदे। टोपी की कीमत दस्तानों की कीमत की दुगुनी थी और कोट की कीमत टोपी की कीमत की दुगुनी। बताओ कि हरेक चीज़ की कीमत क्या थी?

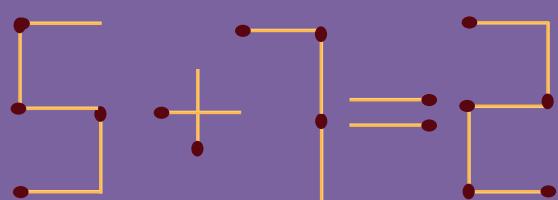
5. एक पेड़ पर 5 कबूतर बैठे थे, वहाँ से 3 तोते उड़ गए। तो अब बताओ पेड़ पर कितने कबूतर बैठे हैं?



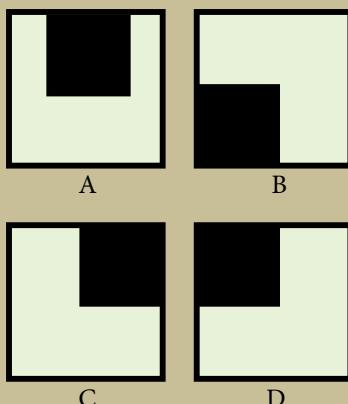
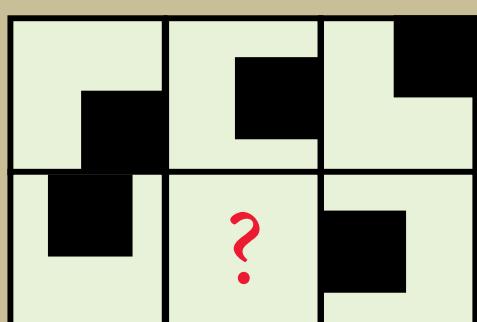
6. दी गई ग्रिड में कई सारे फूलों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

से	वं	ती	अ	क	अ	प	बे	च
ज्	ही	गु	म	जी	म	गु	ला	ब
गु	ङ	ह	ल	गें	रा	ल	चं	पा
ल	की	च	ता	दा	का	में	चाँ	रि
ओ	सू	मे	स	पु	उ	ह	द	जा
ह	र	ली	ली	दा	स्त	दी	नी	त
र	ज	नी	गं	धा	ब	नी	क	के
जा	मु	न	र	गि	स	हा	ने	व
पा	खी	ला	ह	र	सि	गा	र	ङा

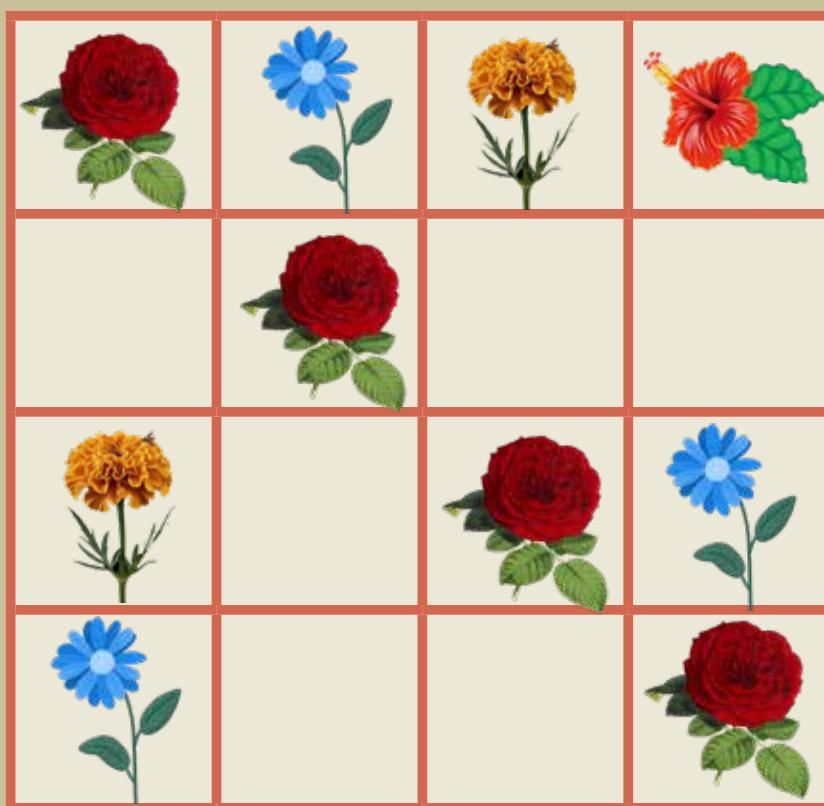
केवल एक तीली को
इधर-उधर करके
इस समीकरण को
सही करना है, कैसे
करोगे?



7. दिए गए टुकड़ों में से कौन-सा टुकड़ा इस चित्र में एकदम फिट बैठेगा?



8. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग फूल आने चाहिए।
इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से फूल आएंगे?



आथा पच्ची

फटाफट बताओ

दो अंकों का उपयोग करके
लिखी जाने वाली सबसे
छोटी संख्या कौन-सी है?

(श्रीष्ट ६।६, ८।८)

क्या है जिसे काटते हैं,
पीसते हैं, बाँटते भी हैं पर
खाते नहीं हैं?

(रिक्ष काशक)

क्या है जिसे दिन भर उठाते
व रखते हैं और बिना उसके
कहीं जा नहीं सकते हैं?

(मङ्क)

रात में है, दिन में नहीं
दिए के नीचे है, ऊपर नहीं

(एड्ड)

खाती है ना पीती है,
पीटो तो चिल्लाती है

(कलड़ि)

दो किसान लड़ते जाएँ,
उनकी खेती बढ़ती जाए
(छर्क्क)

अन्तिम दोनों पहलियाँ उत्तर प्रदेश के
अयोध्या के यश विद्या मन्दिर की कक्षा ३
की छात्रा श्रेया ने भेजी हैं।

जवाब पेज 42 पर

3	4			1		8	
1	8	3	5				
7	5					9	
4	3	5		8		2	
			7				
8	5	7		9		1	
7			5				
9	2	6	1	4	8	5	
5		7	2		1	9	6

सुडोकू 81

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।



10 →



14 →



11 →



9 →

5 →



12 →

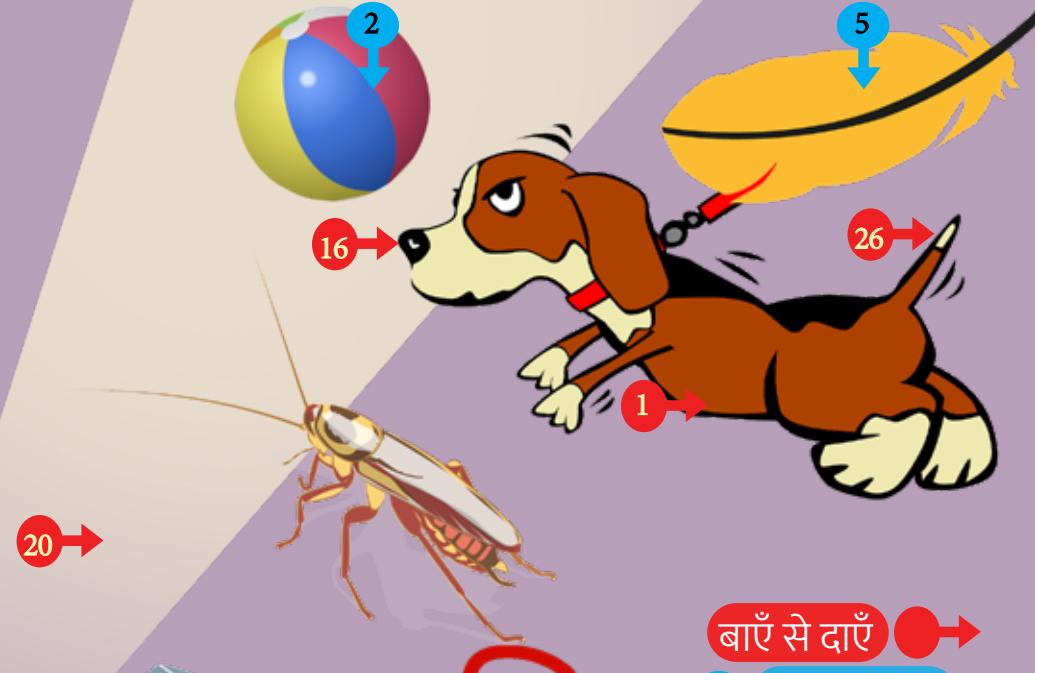


4 →

17 →

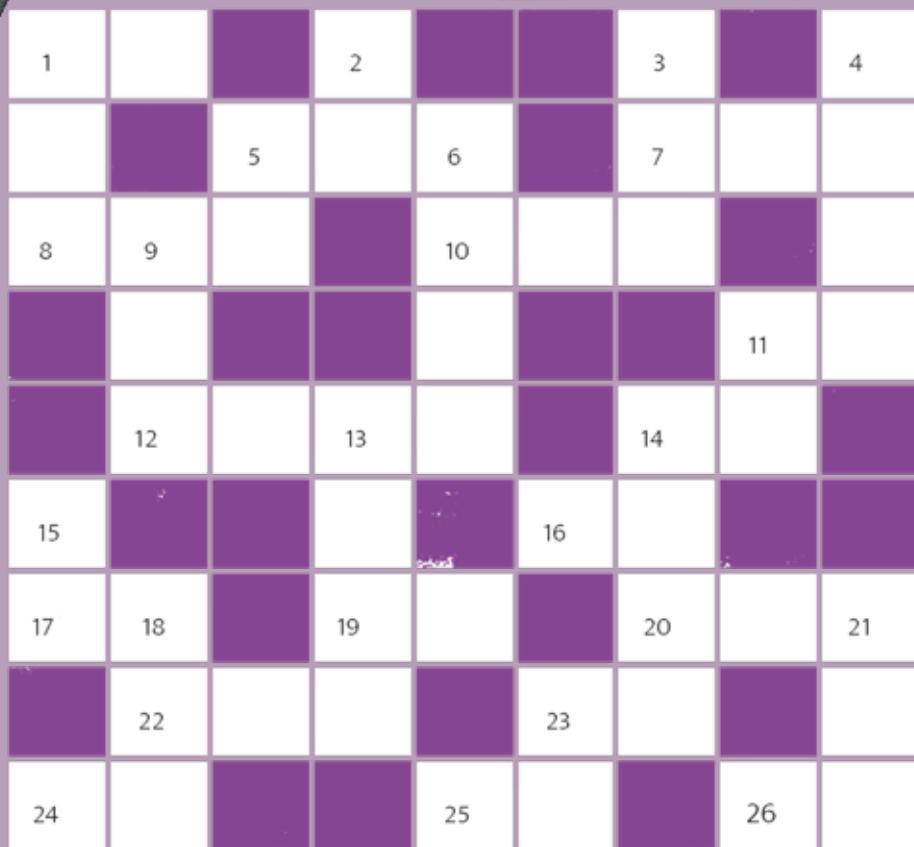
24 →

3 →



चित्र पहेली

बाँ से दाँ
ऊपर से नीचे



जवाब पेज 42 पर

डायरी जैसा दोस्त

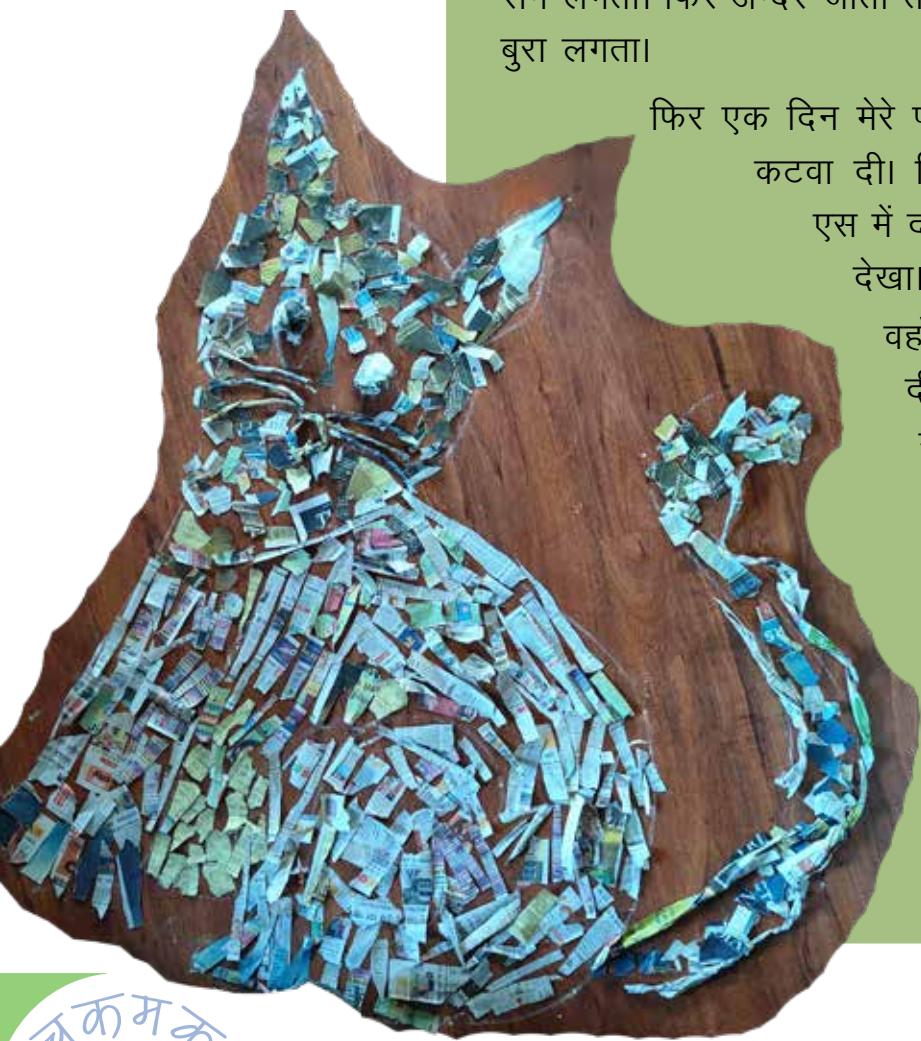
सुमन

आठवीं, अजीम प्रेमजी स्कूल
टोक, राजस्थान

मुझे आर्ट बहुत पसन्द है। आर्ट तो मेरी डायरी की ही तरह एक दोस्त है। आर्ट में मुझे बहुत इंट्रेस्ट है। हर महीने मैं कुछ नया सीखती हूँ। मेरी बहन को तो फायदा है कि उसके चित्र मैं बना देती हूँ। कोई भी चित्र बनवाना हो तो वो मुझसे ही बनवाती है। वो कहती है कि तू मन से बनाया कर। तू अच्छे चित्र बनाती है।

जब मैं छोटी थी तो दीवारों पर चित्र बनाती थी क्योंकि स्कूल में चित्र नहीं बनवाते थे। फिर एम. एम. एम. स्कूल में मेरा एडमिशन हुआ। वहाँ पर जब दीवारों पर चित्र बनाने वाले आते तो मैं उन्हें देखा करती। उन्हें देखने के लिए मैं पानी पीने के बहाने बाहर आ जाती। पर जब अन्दर न जाती तो टीचर मारते और कहते, “इसलिए आई हो तुम बाहरा” मैं रोने लगती। फिर अन्दर जाती तो बच्चे मुझ पर हँसने लगते। मुझे बहुत बुरा लगता।

फिर एक दिन मेरे पापा ने मेरी और मेरी बहन की टीसी कटवा दी। फिर मुझे और खुशी दीदी को ए पी एस में दाखिला कराने लाए। मैंने पूरे स्कूल को देखा। तब बच्चों की छुट्टियाँ लग गई थीं। वहाँ पर मेरा एडमिशन हो गया पर खुशी दीदी का नहीं हुआ। जब स्कूल खुले तो मेरा कोई दोस्त नहीं था। तब पुनीत, मुस्कान, छवि दीदी, अक्षिता दीदी से मैंने दोस्ती की। कुछ दिनों बाद बहन का भी एडमिशन हो गया। मैं हर जगह घूमा करती। हमें अण्डा, दूध और बिस्कुट मिलते। यहाँ पर आर्ट का पीरियड होता है, और म्यूज़िक का भी। और यहाँ मारते भी नहीं हैं।



चित्र: उत्तराखण्ड के नैनीताल के ग्राम प्यूडा के आरोही बाल संसार की कक्षा 6 व 7 के बच्चों द्वारा बनाया गया।

चित्र: राधिका केसरी, सातवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, परसा, अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

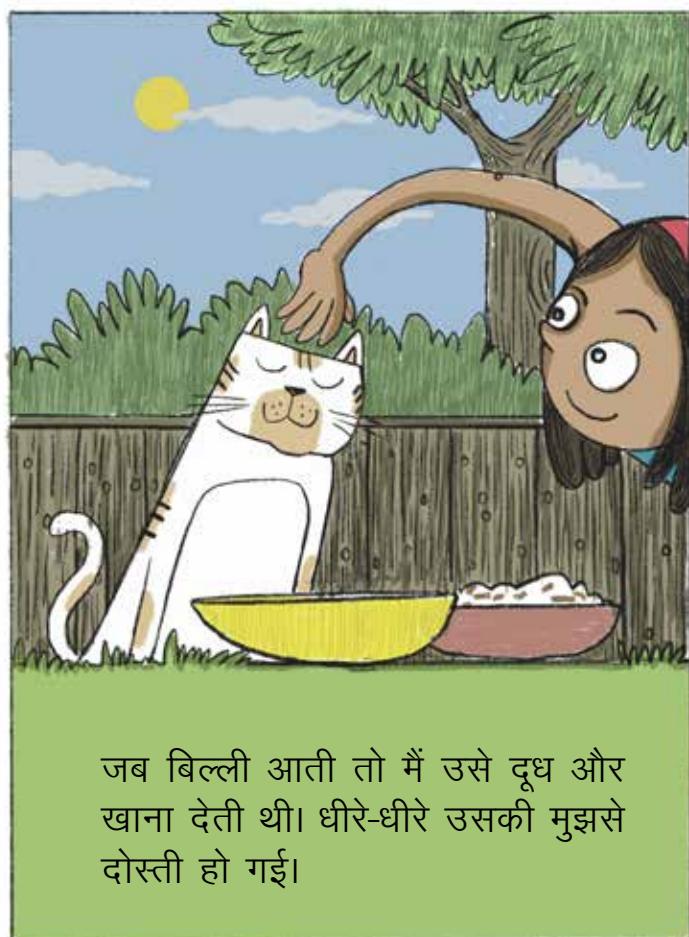


जब मेरा दाँत टूटा

अंशिका यादव
दूसरी, कम्पोजिट स्कूल
धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मैं सात साल की हूँ। मेरे मुँह में 24 दाँत हो गए थे। तभी आगे का एक दाँत हिलने लगा और टूट गया। तब मेरी माँ ने बताया कि टूटे हुए दाँत को इन चार जगहों में से किसी एक जगह छिपाकर रख देना – 1. बाँस की कोठी में, 2. घर के छपरे में 3. कुएँ या नल के पास मिट्टी में 4. केले की पेड़ की जड़ में। माँ ने कहा था दाँत के साथ चावल और काले उड्ढ की दाल लेकर उसे गाड़ देना। इससे दाँत को खाना मिलता रहेगा। मैंने खूब सोचा और अपना दाँत कुएँ के पास गाड़ने का तय किया। क्योंकि कुएँ पर घास बहुत जल्दी उग जाती है।

मेरा पूँछ

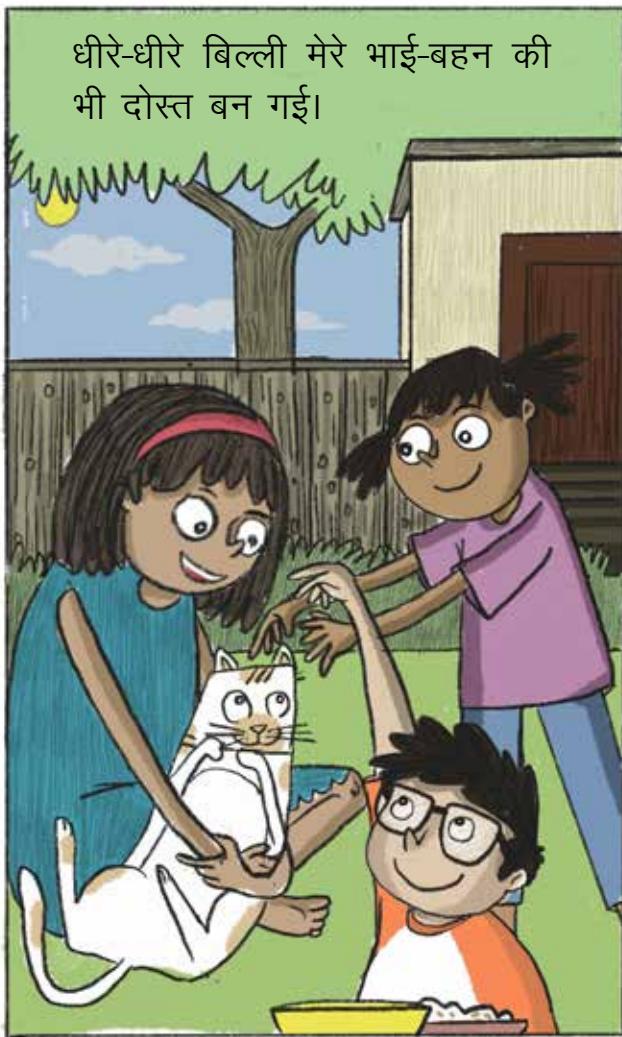


बिल्ली से दोस्ती

अदिति पहली, 'सी', यश विद्या मन्दिर, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

चित्र: प्रभाकर डबराल

धीरे-धीरे बिल्ली मेरे भाई-बहन की
भी दोस्त बन गई।



बिल्ली के बाल बहुत मुलायम थे। मगर
नाखून नुकीले थे। बिल्ली को भी मज़ा
आने लगा था हम सभी के साथ।



मगर एक दिन बिल्ली कहीं चली गई और वापिस नहीं आई।
हम सब बिल्ली को बहुत याद करते हैं।

मैंने देखा झगड़ा

अझीम शेख
तीसरी, सृजन आनन्द विद्यालय
कोल्हापुर, महाराष्ट्र
मराठी से अनुवाद: कृतिका बुरघटे

मैंने जो झगड़ा देखा है, वो ज़रा अलग है। मैंने दो बिल्लियों को आपस में लड़ते हुए देखा। मैंने सोचा, “हे भगवान! इन्सान ही नहीं जानवर भी लड़ते हैं!” तब मैं अपने मामा के यहाँ गया हुआ था। मामा के पास सफेद लम्बे बालों वाली बिल्ली है। शाम का वक्त था। आँगन में बिल्ली आराम से लेटी थी। अचानक से एक अनजान बिल्ली वहाँ पर आई। उसे देखकर मामा की बिल्ली गुर्नाने लगी।

जब मैं वहाँ पहुँचा तब लड़ाई चालू थी। वो काला सफेद बिल्ला था। हमारी बिल्ली ने उस ज़ोर-से काटा। वो भाग गया। मुझे आज भी याद है कि झगड़े में हमारी बिल्ली के लम्बे सफेद बाल खड़े होकर सफेद खरगोश जैसे लग रहे थे और उसकी पूँछ तो घर साफ करने वाली झाड़ू की तरह सीधी और कड़क हो गई थी।

हमारी बिल्ली जीत की खुशी में घुर-घुर कर रही थी। उसकी खुशी उसके गुर्नाने के आवाज से झलक रही थी। ये लड़ाई बहुत मजेदार थी। पर मुझे उस बिल्ले के लिए ज़रा बुरा लग रहा है। उसे भागने के लिए ज़मीन कम पड़ गई थी।



चित्र: राव्या सेठी, तीसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

सानिया ने रंग-बिरंगी तितली देखी। तितली सानिया के चारों ओर मँडराने लगी। मँडराते-मँडराते तितली खिड़की से बाहर निकल गई। सानिया भी तितली के पीछे-पीछे भागी। सानिया ने चिड़िया से पूछा, “तुमने मेरी तितली को देखा है?” चिड़िया बोली, “नहीं” और वह पानी पीने लगी। सानिया रास्ते पर पड़े पत्तों से खेलने लगी।

“सानिया, सानिया” माँ की आवाज़ सुनते ही सानिया घर लौट गई। माँ ने पूछा, “कहाँ थी?” “मैं... मैं तो तितली पकड़ने निकली थी। लगता है तितली भी अपनी माँ के पास चली गई,” सानिया बोली।

सानिया और तितली

रुबी साय पैकरा
पाँचवां, प्राथमिक शाला कुँजारा
रायगढ़, छत्तीसगढ़





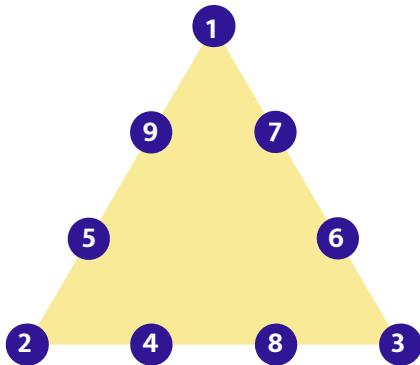
चित्र: मनश्री करमालकर, दूसरी, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मेरी चाय कैसी लगी

आरुषि पाल
पाँचवीं, चकमक क्लब, कीरत नगर
लासी प्रोजेक्ट, एकलव्य फाउंडेशन
भोजपुर, रायसेन, मध्य प्रदेश

मुझे खाना बनाना बहुत पसन्द है। एक दिन मेरी दोस्त आई थी। मैंने उसे चाय पिलाई तो वो बोली, “तेरे हाथ की चाय मुझे इतनी अच्छी लगी कि मैंने अपनी माँ से कहा कि माँ मेरी दोस्त ने इतनी अच्छी चाय बनाई कि मेरा मन तो हो रहा है कि दुबारा से उसके घर चली जाऊँ। लेकिन क्या करूँ बार-बार जाना अच्छा भी तो नहीं लगता। कोई क्या सोचेगा कि यह लड़की कैसी है। जो अपनी दोस्त के घर जाकर बार-बार चाय पी रही है।”

1.



2. 4 नम्बर के चित्र में, क्योंकि बाकी सभी चित्रों में उतनी रेखाएँ हैं जितनी कि उनके नीचे संख्या लिखी है। पर इसमें सिर्फ 3 रेखाएँ हैं।

4. माना कि दस्तानों की कीमत x रुपए है। टोपी की कीमत दस्तानों की कीमत से दुगुनी है, इसलिए $2x$ हुई।

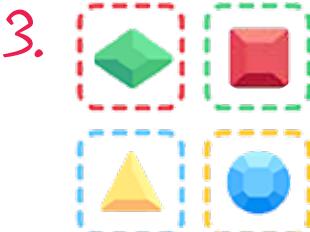
कोट की कीमत टोपी की कीमत से दुगुनी है, इसलिए $2 \times (2x) = 4x$ हुई।

तीनों चीजों की कीमत 560 रुपए, इसलिए $x + 2x + 4x = 560$

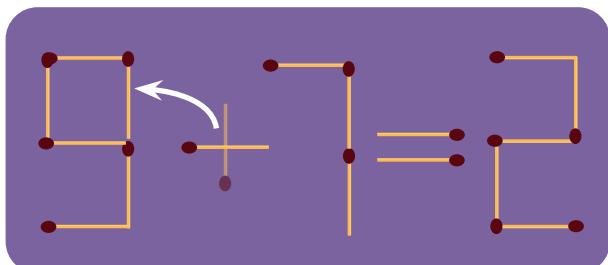
$$7x = 560$$

$$x = 80 \text{ रुपए}$$

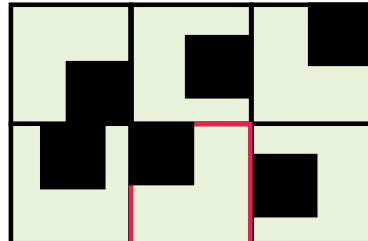
तो दस्तानों की कीमत हुई 80 रुपए, टोपी की कीमत $80 \times 2 = 160$ रुपए और कोट की कीमत $80 \times 4 = 320$ रुपए।



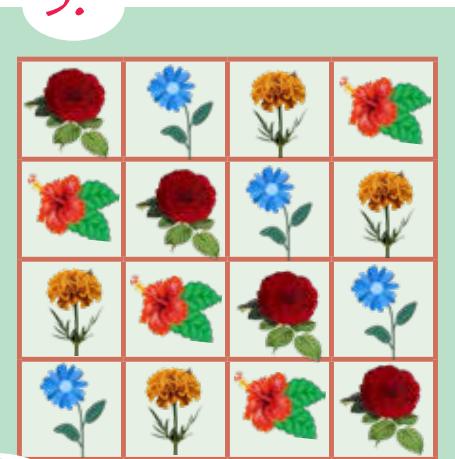
5. क्योंकि उड़े तो तोते थे।



8. D वाला



9.



इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

1 गु	ता	2 मे	3 ये	4 गव
र	5 य	द	7 य	मे
8 ती	9 ता	र	10 त	र
ब				11 टो
12 ला	ल	13 टे	न	14 ली
15 च		ली		15 ची
17 का	र	19 फो	टी	20 रो
22 ब	ट	न	23 ये	च
24 मा	ही		25 ये	ट
			26 दु	म

सुडोकू-81 का जवाब

3	4	9	6	7	1	2	8	5
2	1	8	3	5	9	6	4	7
6	7	5	4	8	2	3	1	9
4	9	3	5	1	6	8	7	2
1	6	2	8	9	7	5	3	4
8	5	7	2	3	4	9	6	1
7	3	1	9	6	5	4	2	8
9	2	6	1	4	8	7	5	3
5	8	4	7	2	3	1	9	6

तुम भी जानो



डायनासोर के ज़माने के पत्थर...

...हमारे पैरों तले! अमूमन अपने शहरों-गाँवों में चलते-फिरते समय हम इस बात से अनजान होते हैं कि हमारे पैरों के नीचे के कुछ पत्थर खरबों साल पुराने हैं। इनमें से कुछ तो डायनासोर के ज़माने के हैं और कुछ उनसे भी पुराने। जैसे कि बैंगलुरु शहर के बीचोंबीच स्थित लालबाग बगीचे के टीले और हैदराबाद के पत्थर। ये पत्थर 250 करोड़ से 360 करोड़ साल पुराने हैं। ज़रा पता तो करना कि तुम्हारे आसपास के पत्थर के कुछ टीले कितने पुराने हैं।

‘बेलना’ अब अँग्रेजी शब्दकोश में

हर साल ऑक्सफोर्ड के अँग्रेजी शब्दकोश में विविध भाषाओं के शब्द जोड़े जाते हैं। ये वो शब्द होते हैं जिन्हें दुनिया के अलग-अलग इलाकों में अँग्रेजी बोलने वाले लोग इस्तेमाल करते आ रहे हैं। इस तरह हिन्दी के भी कई शब्द अँग्रेजी में जुड़ चुके हैं, जैसे कि चाय, चटनी और लूट।

2024 उन दुर्लभ सालों में से होगा जब भारतीय भाषाओं से कोई शब्द इस शब्दकोश में जोड़ा नहीं गया। लेकिन हिन्दी से आनेवाले शब्द ‘बेलन’ से बने ‘बेलना’ को अँग्रेजी शब्दकोश में शामिल किया गया है। यह शब्द केरीबियन द्वीपों के भारतीय मूल की आज की पीढ़ी इस्तेमाल करती है। यह एक संज्ञा है, जैसे हिन्दी का बेलन है।



मङ्क

महुआ की डालियों ने शहद है बरसाई
 सफेद गीठे फूलों की चादर बिछाई
 पहले खाजा जगीन ने, फिर चींटी ने खाई
 गौरेया, बुलबुलें, मधुमक्खियाँ भी आई
 हिरनों, बकरियों ने खूब दावत उड़ाई
 गाय के दूध से भी महक महुपु की आई।

बन्दरों-लंगूरों की टोलियाँ भी आई
 बहुत-से फूल और कुछ डालियाँ गिराई
 सुबह-सुबह उन सबने डलियाँ उठाई
 माँ, नानी, दादी, मौसी और मेरी ताई
 बीन-बीनकर महुआ वो घर को लेके आई
 शाम को हमने लापसी और पूरी भी खाई।

महुआ की डालियों पे दावत नहीं रुकी थी
 आवाजें चमगाढ़ों की सुनाई दे रही थीं
 हिरनों को भी खाने की कोई कगी नहीं थी
 सूअरों की टोली नीचे मदमस्त-सी यड़ी थी
 डालियों पे अब भी शहद बन रही थी
 सफेद गीठे फूलों की चादर बिछ रही थी।

महुआ

कनक शशि